हिंदी

कक्षा VII

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

KT 35-1/Hindi-7 Vol-1

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है।

हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे।

हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :

State Council of Educational Research and Training (SCERT)

Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala

Website : www.scertkerala.gov.in

e-mail : scertkerala@gmail.com

Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869

First Edition : 2014, Reprint : 2016

Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30

© Department of Education, Government of Kerala

प्यारे बच्चो,

अब आपके हाथ में हिंदी की नई पाठ्यपुस्तक है। इसमें आपके पसंद की साहित्यिक विधाएँ-कहानियाँ, कविताएँ, एकांकी, जीवनी का अंश, लेख आदि सम्मिलित हैं, इसीके साथ दैनिक व्यवहार में आनेवाली कुछ व्यावहारिक विधाएँ भी हैं। इनमें से गुज़रकर हिंदी भाषा और साहित्य के बुनियादी अंशों को समझने की भरसक कोशिश करें। इकाइयों से जीवनमूल्यों का प्रतिफलन आप ज़रूर पाएँगे। उन्हें भी अपनाने का प्रयास करें।

इसी आशा के साथ

डॉ.पी.ए. फ़ातिमा
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

अध्यापकों के लिए

सातवीं कक्षा के छात्र हिंदी शिक्षण के तीसरे दौर पर हैं। पाँचवीं तथा छठी कक्षाओं में से भाषा के कुछ बुनियादी रूपों से गुज़रकर आ रहे हैं। अब साहित्य की कुछ प्रामाणिक विधाओं का परिचय कराना है। बच्चों की आयु तथा अनुभव के अनुकूल पाठ्य सामग्रियों का चयन किया गया है। बच्चों की बौद्धिक, मानसिक स्तर एवं ग्राह्य क्षमता को दृष्टि में रखकर प्रक्रियाबद्ध करने के प्रयास के साथ-साथ उनके नैतिक मूल्यों को जागृत करने की भी संचेतना है। इकाइयों में प्रेरक, रोचक, ज्ञान वर्धक पाठों को संकलित किया गया है। हिंदी भाषा की बनावट, व्याकरण ज्ञान के साथ सरल, सरस प्रयोगों के समावेश से अधिक आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाने की कोशिश की है। प्रत्येक इकाई के अंत में अधिगम उपलब्धियाँ दी गई हैं। आप पहले ही उससे परिचय पा लें, और छात्रों के स्तरानुकूल प्रक्रियाएँ तैयार करें। विश्लेषणात्मक प्रश्नों का सम्यक उपयोग आशय ग्रहण में अधिक सहायक बन जाएगा। व्याकरण शिक्षण के लिए नमूने की कुछ प्रक्रियाएँ ही दी गई हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक प्रक्रियाएँ तैयार करें। आशा है कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि पैदा करने में यह पुस्तक मदद करेगी।

पाठ्यपुस्तक रचना

कक्षा सात

हिंदी

कार्यशाला के सदस्य

अध्यक्ष

डॉ.वी.पी मुहम्मद कुंज मेत्तर

परामर्शदाता

प्रोफसर एम.एस जयमोहन

विशेषज्ञ

डॉ.एच.परमेश्वरन

डॉ.वी. कुमारन

डॉ. बी. अशोक

डॉ. ए. अच्युतन

एम.वेणुगोपाल, जी.बी.एच.एस.एस मितृम्मला, तिरुवनंतपुरम

अनिलकुमार.एन, जी.एच.एस.एस किलिमानूर, तिरुवनंतपुरम

डॉ.पी.ए.रघुराम, सेंट माइकिल्स एच.एस.एस कण्णूर

षनोजकुमार.एन.के, जी.वी.एच.एस.एस फोर गेल्स नडक्कावु, कोषिक्कोड

अनिलकुमार.एन.एस, जी.यू.पी.एस मुल्लूर पनविला, तिरुवनंतपुरम

डॉ.श्रीजा.जे, जी.जी.एच.एस.एस कोट्टणहिल, तिरुवनंतपुरम

आर.आर.अजितप्रसाद, जी.एच.एस.एस कुलत्तूप्पुषा कोल्लम

राजेंद्रबाबु.डी, जी.एम.बी.एच.एस.एस चाला, तिरुवनंतपुरम

रोशनी.एम.एस, जी.यू.पी.एस कावनाड, कोल्लम

चित्रकार

सी.राजेंद्रन, ए.वी.जी.बी.एच.एस तष़वा

एलियास.पी.वी, जी.एम.एच.एस.एस. वेल्लमुंडा, वयनाड

एन.टी.राजीवन जी.एच.एस.एस, तरियोड, वयनाड

ले-आउट

हरिदास.एम.ए

अकादमिक समायोजिका

डॉ.रेखा.आर.नायर

अनुसंधान अधिकारी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

केरल, तिरुवनंतपुरम

अनुक्रमणिका

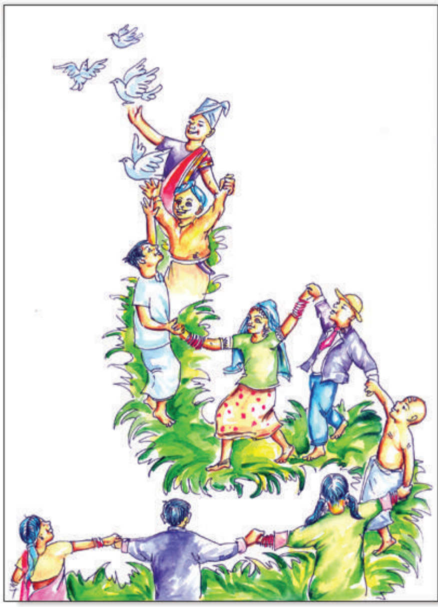

इकाई एक 9-23

गुलमोहर का जन्मदिन	कहानी
हम सब सुमन एक उपवन के	कविता

इकाई दो 24-33

अनमोल खज़ाना	कहानी
कोशिश करनेवालों की	कविता

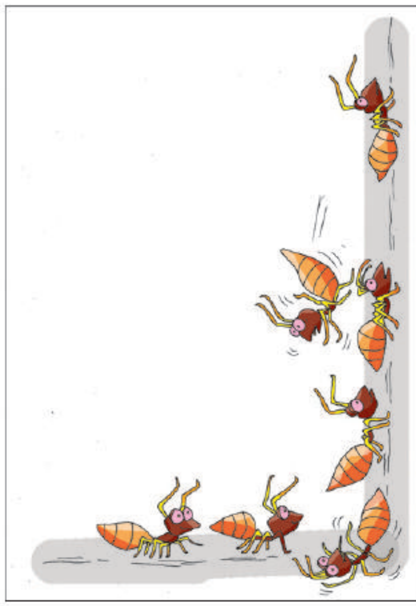

अनुक्रमणिका

इकाई तीन 34-53

ज़रूरी खुराक़ — बाल एकांकी

एक दौड़ ऐसी भी — लेख

इकाई चार 54-63

राजा का दरवाज़ा — कहानी

तब याद तुम्हारी आती है — कविता

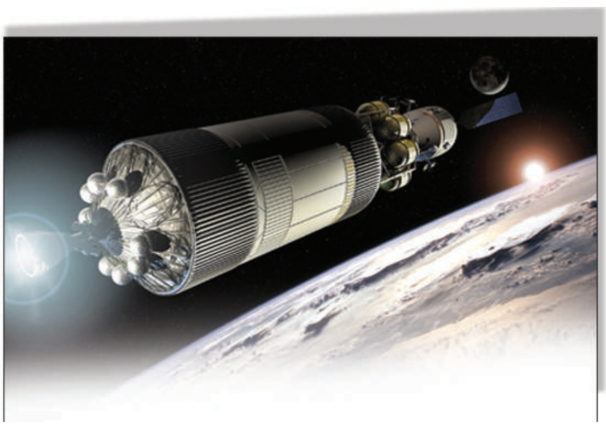

इकाई पाँच 64-72

आसमान के लिए — जीवनी

मेरा जीवन — कविता

तस्वीरें बताती हैं।

छात्र लिखें

छात्र पढ़ें

छात्र खोजें

छात्र अनुबद्ध कार्य करें

छात्र बताएँ

छात्र एक साथ गाएँ

अध्यापिका कहें

छात्र सृजन करें

छात्र बनाएँ

ग्रूप चर्चा

आपसी आकलन

छात्र स्व-आकलन करें

अध्यापक का आकलन

इकाई एक

कश्यप निवास
जुहू, मुंबई
4 मई 2014

प्रिय निर्मल,

नमस्ते।

परसों मेरे प्यारे गुलमोहर के पेड़ का पाँचवाँ जन्मदिन है।

मैं उसकी वर्षगाँठ मना रही हूँ।

तुम ज़रूर आना। परसों, शामको साढ़े चार बजे।

तुम्हारी मीना

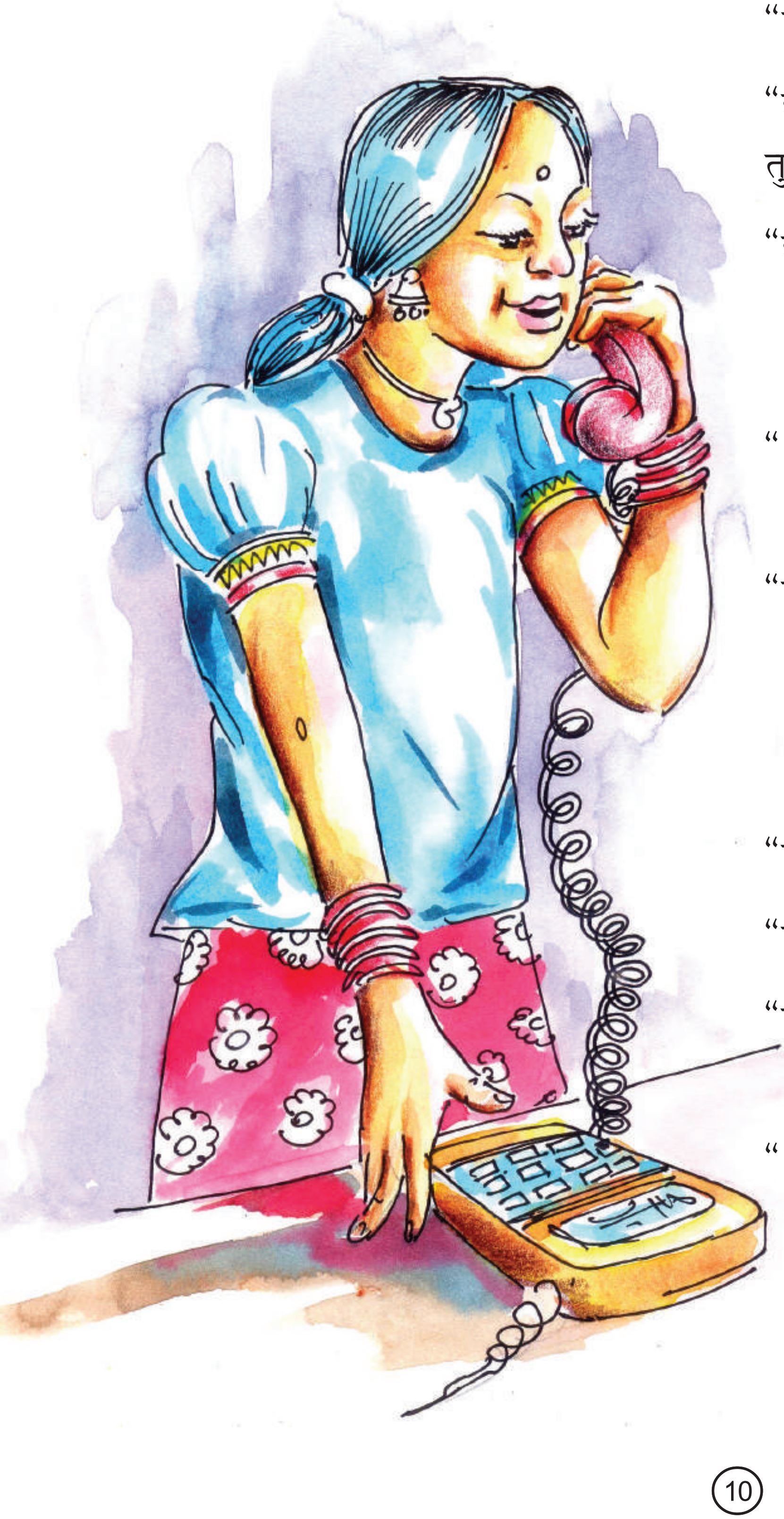

“हैलो।”

“हैलो, निर्मल! कैसी हो?
तुम्हें मेरी चिट्ठी मिल गई?”

“हाँ। इसीलिए तो टेलीफ़ोन कर रही हूँ। मुझे तुम्हारी चिट्ठी समझ में ही नहीं आई। किसका जन्मदिन है?”

“अरे, लिखा तो था चिट्ठी में। हमारे गुलमोहर के पेड़ का।”

“गुलमोहर के पेड़ का! अरे, कोई पेड़ का भी जन्मदिन मनाता है? तुम मेरे साथ मज़ाक तो नहीं कर रही । सच-सच बताओ, मीना?”

“सच! मैं मज़ाक नहीं कर रही।”

“पर पेड़ का जन्मदिन क्यों मना रही हो?”

“इसकी एक कहानी है। बस, तुम ज़रूर आना। मैं तुम्हें सारी कहानी बता दूँगी।”

“अच्छा, ज़रूर आऊँगी।”

गुलमोहर का जन्मदिन

संतोष साहनी

छह मई की शाम। मीना के घर के बगीचे में गुलमोहर के पेड़ के नीचे एक दरी बिछी है। दरी पर सफ़ेद चादर है। एक ओर खाने-पीने की चीज़ें रखी हैं।

निर्मल, चंपा, कुलवंत, पुष्पा, नसीमबानू और शीला बातें करती चली आ रही हैं। सबके हाथों में उपहार हैं।

"मीना, दिखाओ तो, वह गुलमोहर कहाँ है?" निर्मल बोली।

“आओ, आओ, यह देखो।” मीना ने बगीचे में उन्हें गुलमोहर का वृक्ष दिखाया। कोमल-कोमल पत्तियोंवाला एक सुंदर वृक्ष। पत्तियों के बीच में से लाल और केसरिया रंग के सुंदर फूल झाँक रहे थे, मानो मीना की सहेलियों को देखकर धीमे-धीमे मुसकरा रहे हों।

मीना की सहेलियाँ उसके घर पहुँचीं।
बगीचे के सामने एक पोस्टर लगाया था। वह पोस्टर कैसा होगा?

....

....

....

वर्षगाँठ

....

....

....

मेरा पोस्टर...
- गुलमोहर की वर्षगाँठ से संबंधित है।
- स्थान, तारीख, समय आदि का उल्लेख है।
- आकर्षक है।

"जन्मदिन की बधाई हो गुलमोहर।" निर्मल ने हँसकर कहा।

"मीना, अब बताओ, गुलमोहर का जन्मदिन क्यों मना रही हो?" निर्मल ने पूछा।

"यह बेचारा पिछले रविवार को ही कटा जानेवाला था।" मीना बोली।

"क्यों?"

"क्योंकि इसपर फूल नहीं आ रहे थे। छह साल पहले घर तैयार हो जाने के बाद माँ ने बगीचा लगवाया। हरी घास लगवाई, फूलों की क्यारियाँ बनवाईं। अमरूद, आम और गुलमोहर के दो-दो पौधे लगवाए। एक में से लाल और दूसरे में से पीले रंग के फूल निकलने चाहिए थे। पेड़ लगने के कुछ साल बाद एक में से पीले रंग के फूल निकल आए लेकिन इस पेड़ पर चौथे साल भी फूल नहीं आए।"

"अच्छा तो फिर?" निर्मल ने पूछा।

“माँ ने कहा, इस पेड़ को कटवाकर दूसरा लगवाते हैं। पर मैं इस पेड़ को बहुत चाहती थी। मैं सोचती, इस पेड़ पर फूल तो नहीं आए। मगर इसके पत्ते और इसकी डालें कितनी सुंदर हैं। कितनी ठंडी-ठंडी छाया देती है और मेरे कमरे की खिड़की से यह कितना अच्छा लगता है! मैं सोचती, इस पेड़ पर एक न एक दिन ज़रूर फूल आएँगे। माँ ने पक्का फ़ैसला लिया था - पेड़ कटवाने का। मैंने माँ से बड़े प्यार से कहा, “माँ अगर अगली गर्मी में भी इसपर फूल न आएँ तो आप बेशक इसे कटवा दीजिए।”

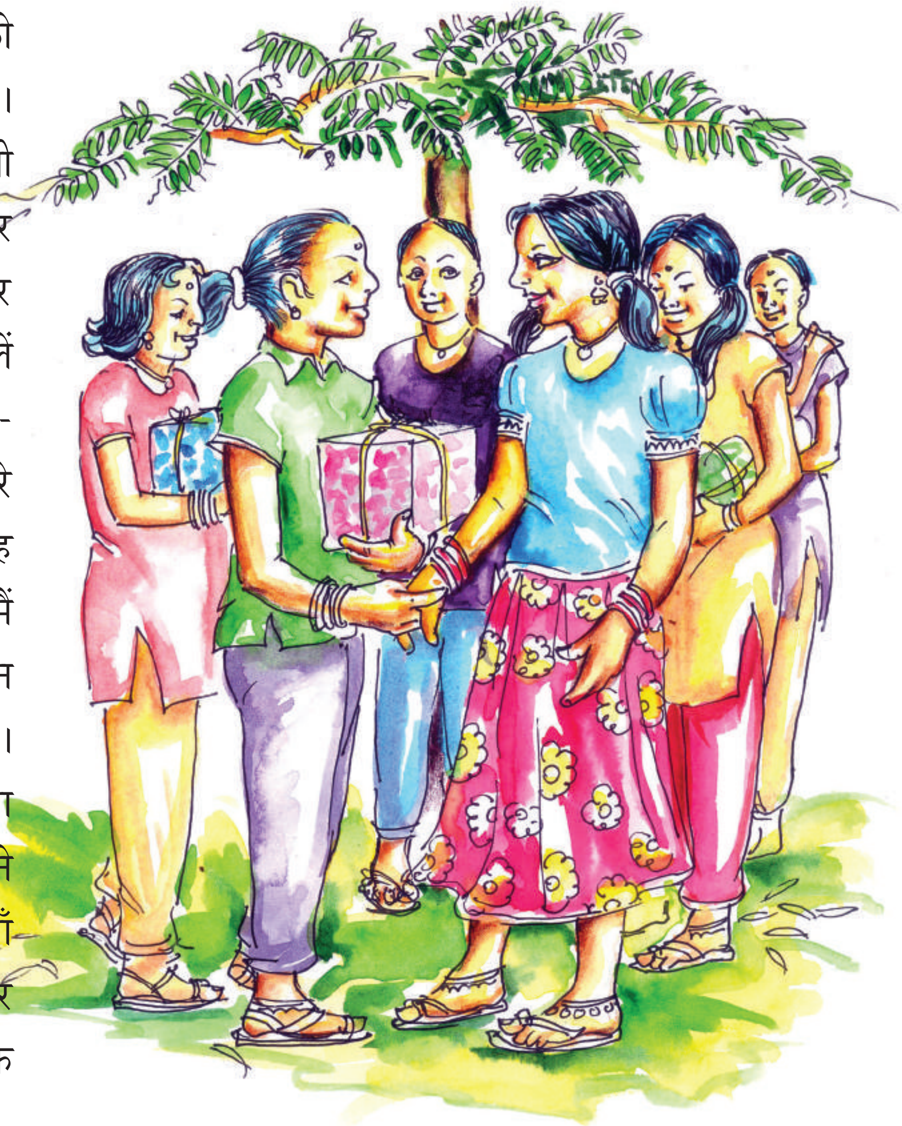

मैं चुपके-चुपके इसे कुछ और पानी दे आती। किंतु इस गर्मी में भी इसपर कोई फूल नहीं खिला। इसपर मैं बहुत उदास थी। मैंने सोचा, माँ इसको ज़रूर कटवा देंगी। एक दिन माँ ने माली से कहा, “इस गुलमोहर को काट दो और इसकी जगह पर दूसरा गुलमोहर लगाओ।”

‘मीना चुपके से गुलमोहर को कुछ और पानी दे आती।’ वह ऐसा क्यों करती है ?

मैं सारे दिन बहुत उदास रही। कल तो मेरा प्यारा पेड़ होगा ही नहीं।"

दूसरे दिन सुबह माँ मुझे जगाते हुए बोलीं, "मीना, मीना। उठो, उठो। तुम्हें कुछ दिखाऊँ, ज़रा गुलमोहर को देखो,"

"कहाँ? क्या?" मैं आँखें मलते हुए देखने लगी।

"ध्यान से देखो, गुलमोहर के पत्तों के बीच।"

"फूल! गुलमोहर पर फूल आए हैं।"

मैं खुशी से नाचने लगी। "देखो, देखो, माँ मैं कहती थी न कि इस गर्मी में मेरे गुलमोहर पर फूल आएँगे," मैं बोली।

"पहली बार आए पाँच छह लाल फूल हरे-हरे पत्तों में से झाँक रहे थे। कितने सुंदर लग रहे थे। मैं भागकर नीचे बगीचे में गई और गुलमोहर के पेड़ से लिपट गई।"

"कितनी अच्छी बात हुई! इस बेचारे पर फूल आ गए।" निर्मल बोली।

"इस गुलमोहर को काट दो और इसकी जगह पर दूसरा गुलमोहर लगाओ।" माँ के इस मनोभाव पर चर्चा करें।

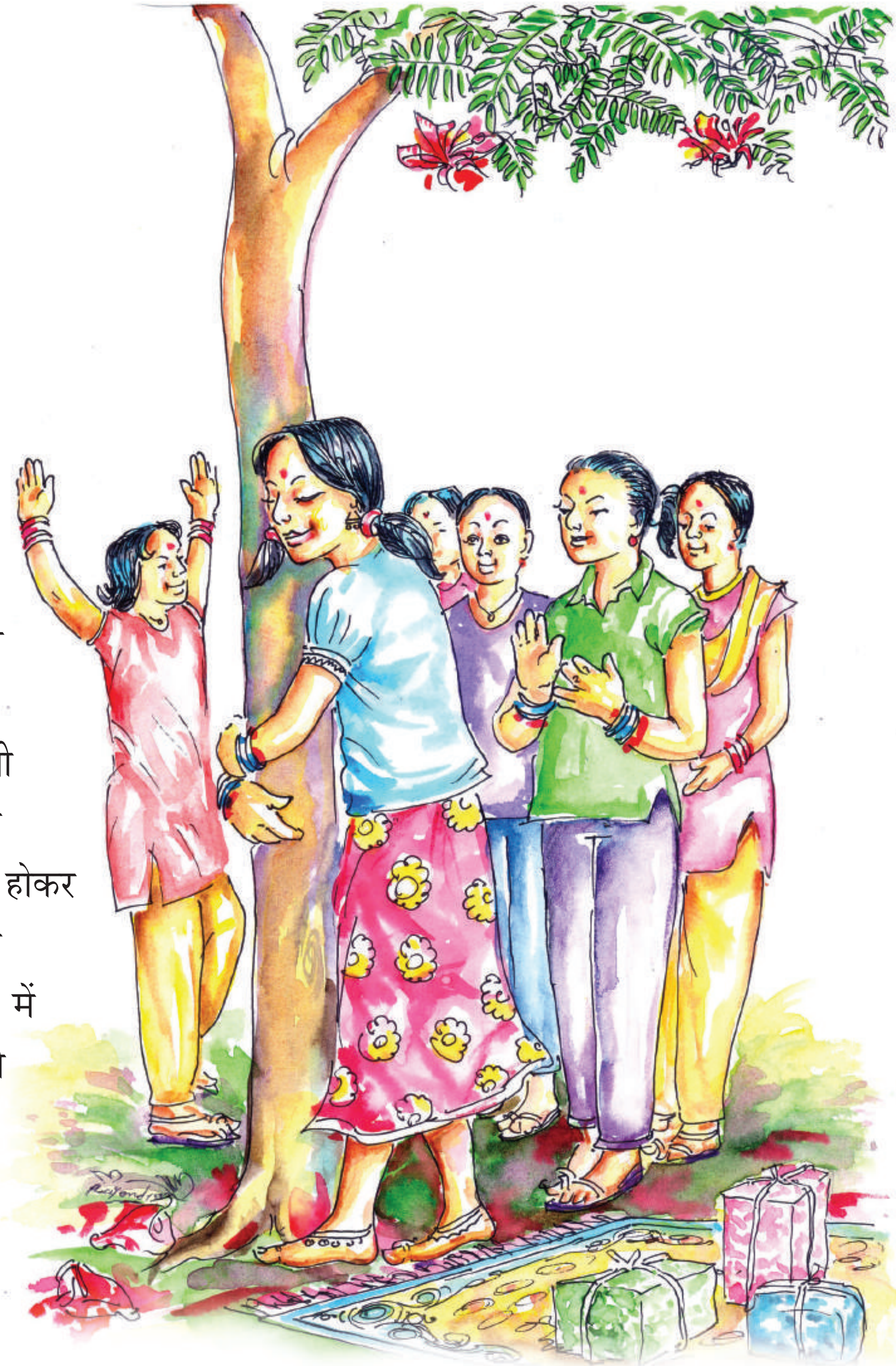

"हाँ!" मीना बोली। फिर माँ भी बगीचे में आ गईं। मैंने माँ से कहा, "माँ मैं अपने गुलमोहर की पाँचवीं वर्षगाँठ मनाऊँगी। मैं अपनी सहेलियों को दावत दूँगी।" माँ ने खुश होकर कहा, "ज़रूर! यहीं गुलमोहर की छाया में दावत करो। अपनी सब सहेलियों को बुलाओ।"

मीना जब कहानी सुना चुकी तो उसने गुलमोहर की तरफ़ देखा। उसको ऐसा लगा जैसे गुलमोहर भी अपनी कहानी सुनता-सुनता मुसकरा रहा था।

"जैसे गुलमोहर भी अपनी कहानी सुनता-सुनता मुसकरा रहा था"-गुलमोहर के विचार क्या-क्या होंगे?

जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रह सकता है। - महात्मा गाँधी

वाक्य चुनकर लिखें।

- "मैं तुम्हें सारी कहानी बता दूँगी।"
- "अच्छा, ज़रूर आऊँगी।"

रेखांकित अंश पर ध्यान दें, पाठ-भाग से ऐसे वाक्य चुनकर लिखें।

....

....

....

....

....

वाक्यों पर ध्यान दें।

पेड़ लगने के कुछ समय बाद एक में से पीले रंग के फूल निकल आए।
माँ ने माली से कहा कि इसकी जगह पर दूसरा गुलमोहर लगाओ।
घर तैयार हो जाने के बाद माँ ने बगीचा लगवाया।

रेखांकित अंशों पर ध्यान दें, पाठ-भाग से ऐसे वाक्य छाँटकर लिखें।

....

....

....

....

....

कहानी पढ़ें, तालिका भरें।

लाल-लाल	फूल
....	पत्ते
....	छाया

पढ़ें, लिखें।

निर्मल चुस्त लड़की है। वह सुंदर और होशियार है। चंचल और चतुर भी है। रामू माली है। मोटा आदमी है। वह सुस्त है, लेकिन ईमानदार है।

निर्मल की विशेषता	रामू की विशेषता
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

अनुवाद करें।

मीना जब कहानी सुना चुकी तो उसने गुलमोहर की तरफ़ देखा। उसको ऐसा लगा जैसे गुलमोहर भी अपनी कहानी सुनता-सुनता मुसकरा रहा था।

बिंदुओं की सहायता से लघु लेख लिखें।

पेड़ों से लाभ

पेड़ों की कटाई क्यों?

पेड़ों के संरक्षण की आवश्यकता

पत्र तैयार करें।

मीना की सहेलियाँ जन्मदिन मनाने आई थीं। लेकिन अपर्णा नहीं आ सकी। जन्मदिन समारोह का विवरण देते हुए निर्मल ने अपर्णा को पत्र लिखा। वह पत्र कल्पना करके लिखें।

स्थान और तारीख हैं।	
अपर्णा को संबोधित किया है।	
जन्मदिन समारोह का विवरण है।	
स्वनिर्देश है।	

हम सब सुमन एक उपवन के

एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी से जन्मे हम
मिली न एक ही धूप हमें है
सींचे जाएँ एक जल से हम।
पले हुए हैं झूल-झूलकर
पलनों में हम एक पवन के
हम सब सुमन एक उपवन के।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी *(1914-1998)*
हिंदी के विख्यात बाल साहित्यकार।
उत्तर प्रदेश में आगरा के रोहता में जन्म।
फूल और शूल (कविता संग्रह), सत्य की जीत,क्रौंच वध (खंडकाव्य) आदि प्रसिद्ध रचनाएँ।
(प्रसिद्ध बाल साहित्यकार कृष्ण विनायक फाड़के ने अंतिम इच्छा इस प्रकार प्रकट की थी कि अपनी शवयात्रा में माहेश्वरी जी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के ' गाया जाए।)

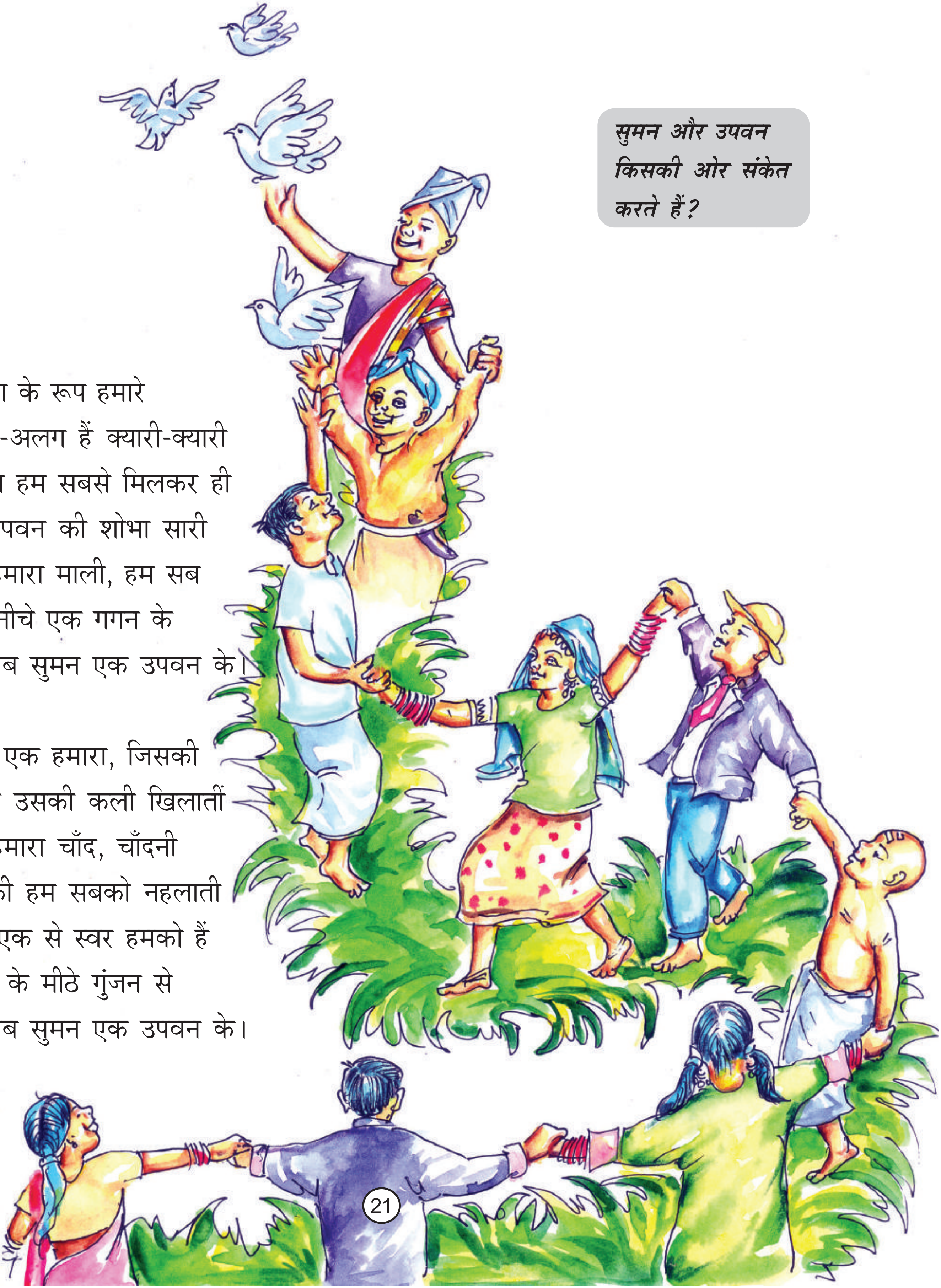

सुमन और उपवन किसकी ओर संकेत करते हैं?

रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग हैं क्यारी-क्यारी
लेकिन हम सबसे मिलकर ही
इस उपवन की शोभा सारी
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के
हम सब सुमन एक उपवन के।

सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उसकी कली खिलातीं
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती
मिले एक से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन से
हम सब सुमन एक उपवन के।

समान अर्थवाले शब्द कविता से चुनकर लिखें।

फूल	....
सूर्य	....
बगीचा	....
भूमि	....
भौंरा	....
चंद्रिका	....

निम्न लिखित अर्थवाली पंक्तियाँ चुनें।

- एक ही सूरज की किरणें कलियों को खिलाती हैं।
- मिलकर रहने में ही शोभा है।
- एक ही पवन के पलनों में झूलकर हम पले हैं।
- एक ही चाँद की चाँदनी हमको नहलाती है।

भाव लिखें।

- मिले एक से स्वर हमको हैं
  भ्रमरों के मीठे गुंजन से

- एक हमारा माली, हम सब
  रहते नीचे एक गगन के।

अधिगम उपलब्धि

- ➢ कहानी पढ़कर आशय ग्रहण करता है।
- ➢ कविता सुन-पढ़कर आस्वादन करता है।
- ➢ पोस्टर तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- ➢ पत्र लिखने की अवधारणा प्राप्त करता है।

शब्दार्थ

उपवन	-	बगीचा
केसरिया	-	केसर रंग का
गगन	-	आकाश
गर्मी	-	ग्रीष्म ऋतु
गुंजन	-	भौरों का गुंजार
चाँदनी	-	चंद्रिका
चादर	-	आयताकार कपड़ा, बिछावन
चुपके	-	किसी से कहे बिना
झाँकना	-	खिड़की से देखना
दरी	-	मोटे सूत का बिछावन
दावत	-	प्रीतिभोज
धरती	-	भूमि
धीमे-धीमे	-	हल्की गति में
धूप	-	आतप, सूर्य का प्रकाश
पालन करना	-	संरक्षण करना, देखभाल करना
फाटक	-	बड़ा दरवाज़ा
फ़ैसला	-	निर्णय
बधाई	-	मंगलाचार, अभिनंदन
बिछना	-	फैलाया जाना
बेचारा	-	दीन और निस्सहाय
बेशक	-	निस्संदेह
मगर	-	लेकिन
मज़ाक करना	-	परिहास करना
मुसकराना	-	मंद-मंद हँसना
लिपटना	-	आलिंगन करना
वर्षगाँठ	-	जन्मदिन
सहेलियाँ	-	सखियाँ
सींचना	-	सिंचाई करना
सुनहरी	-	सोने के रंग का

अनमोल ख़ज़ाना

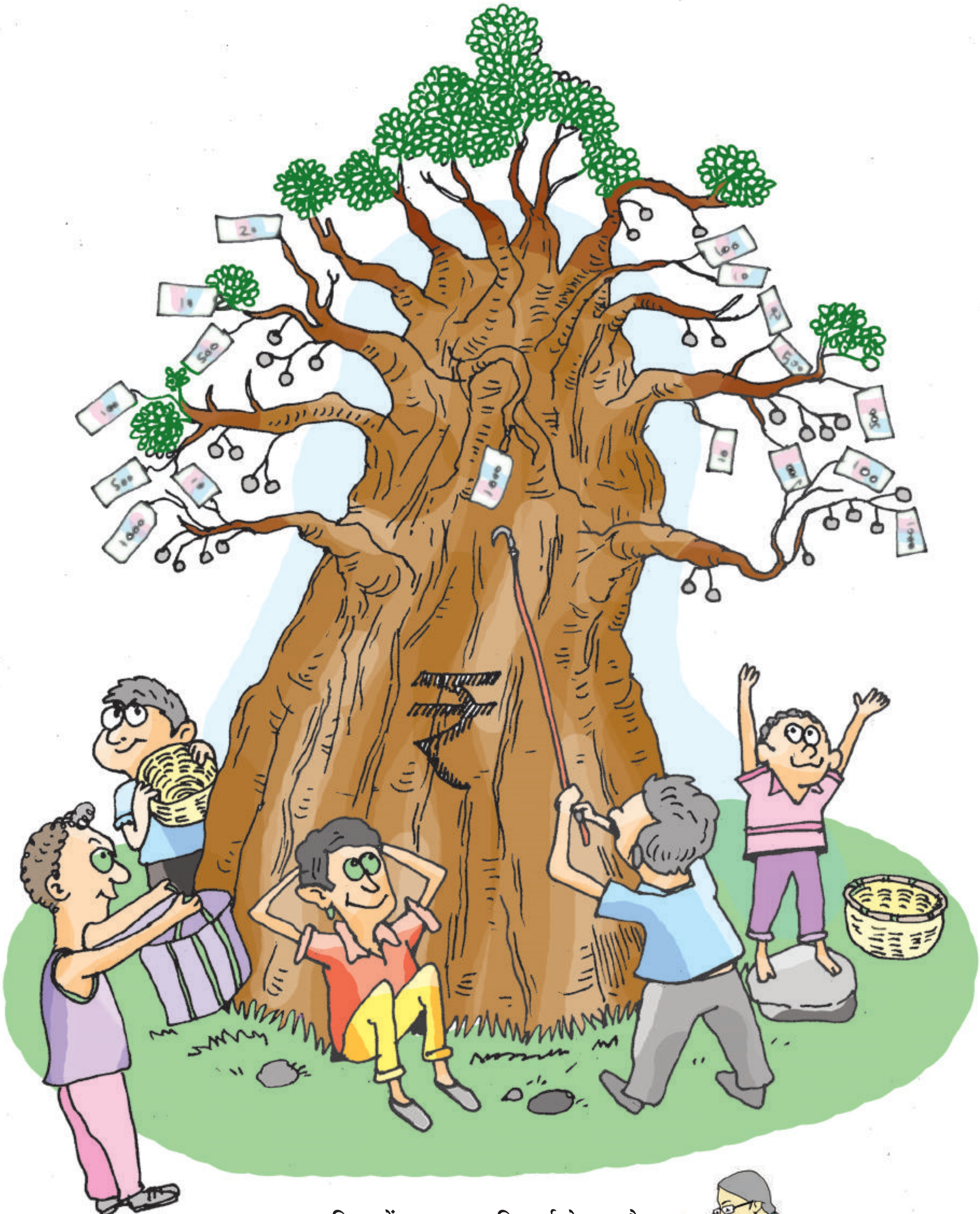

- चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है ?
- पेड़ को नाम दें।

किसी गाँव में विक्रम नामक एक युवक रहता था। एक दिन बैठे-बैठे वह सोचने लगा, "मैं कैसे ढेर सारा धन कमाऊँ और आराम से रहूँ!" उसने इधर-उधर जाकर अपने कई मित्रों से जल्दी धन कमाने का उपाय पूछा। लेकिन कोई ठोस उपाय नहीं मिला।

सुबह का समय था। विक्रम खेतों से होकर जा रहा था। रास्ते में एक किसान से उसने जल्दी धन कमाने का उपाय पूछा। किसान ने विक्रम को बताया - "गाँव के उस पार एक सज्जन रहते हैं। उनका नाम है विश्वनाथ। शायद वे कोई आसान तरीका बता सकते हैं।"

विक्रम जल्दी-जल्दी विश्वनाथ के घर की ओर चल पड़ा। उसके द्वार पर पहुँचकर विक्रम ने देखा कि द्वार खुला हुआ था और विश्वनाथ कमरे में बैठे थे। विक्रम ने उन्हें प्रणाम किया और उनके सामने बैठ गया।

विक्रम के बारे में किसान ने क्या सोचा होगा?

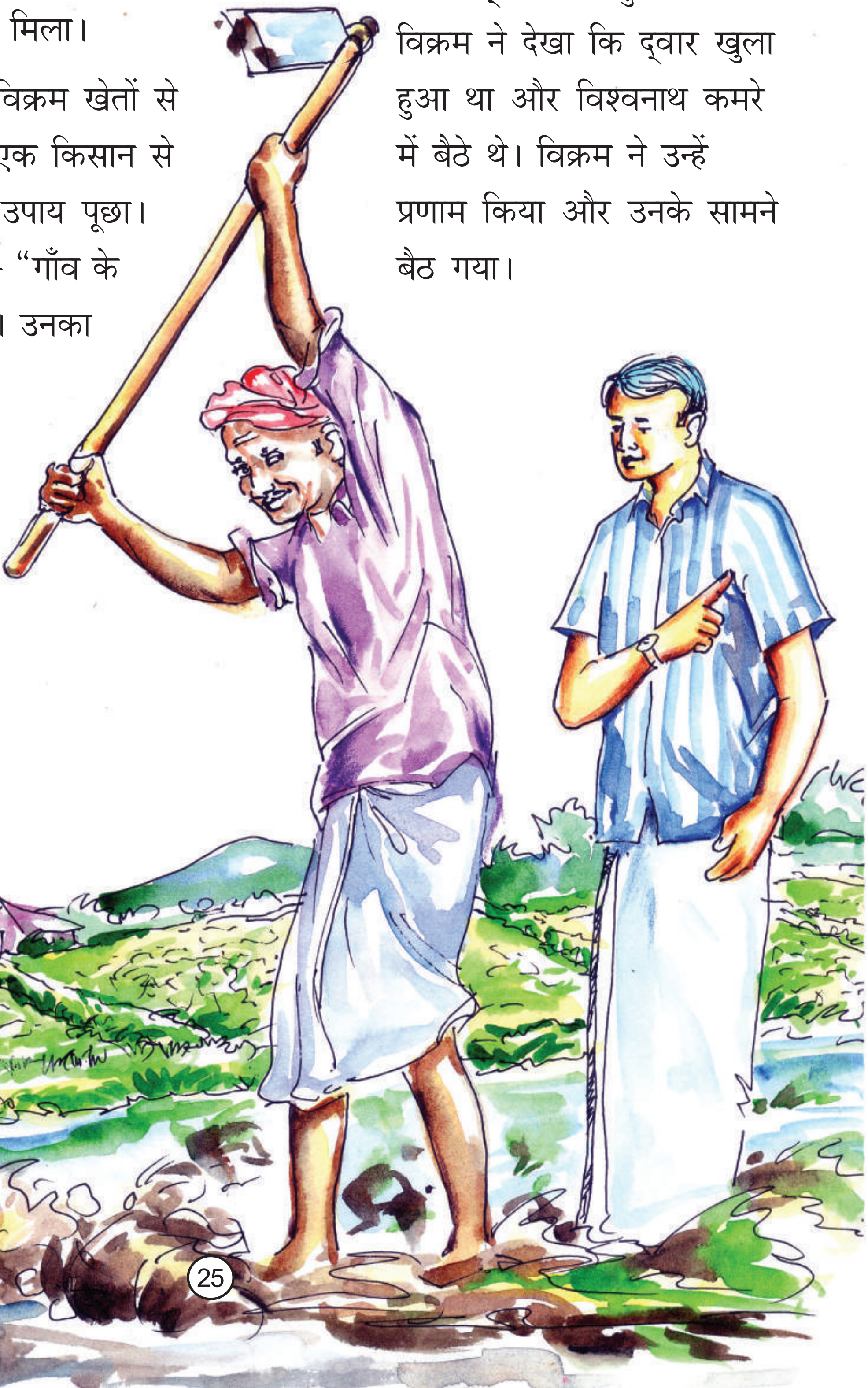

KT 35-3/Hindi-7 Vol-1

जैसे ही विश्वनाथ ने आँखें खोलीं, विक्रम ने अपने मन की बात कही-

"मैं बहुत गरीब हूँ, आप मुझे जल्दी धन कमाने का कोई उपाय बताइए।"

"तुम वसंत नगर जाओ। वहाँ एक आदमी बीस हज़ार रुपए में मनुष्य की आँखें खरीदता है। तुम अपनी आँखें बेच दो।" विक्रम को आश्चर्य हुआ।

"अपनी आँखें बेच दूँ! फिर मैं देखूँगा कैसे?"

"ठीक है, तो पंद्रह हज़ार में अपने दोनों पैर बेच दो।"

"क्या? पैर बेच दूँ तो चलूँगा कैसे?" विक्रम हैरान हुआ।

"तो पच्चीस हज़ार में अपने दोनों हाथ बेच दो।"

"अपने हाथों के बिना मैं काम कैसे करूँगा?"

"तो तुम अपना पूरा शरीर ही बेच दो। तुम्हें एक लाख रुपया मिलेगा।"

विश्वनाथ ने कई उपाय बताए, लेकिन विक्रम ने नहीं माना। क्यों?

विश्वनाथ की बातें सुनकर विक्रम ने क्रोध और दुःख के साथ कहा- "नहीं, नहीं। एक करोड़ रुपए मिलने पर भी मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

विश्वनाथ ने मुसकराकर समझाया- "अरे भाई! अपने शरीर को इतना मूल्यवान समझते तो तुम गरीब कैसे हो? जाओ, तुम्हारा शरीर ही एक अनमोल खज़ाना है, इसका उपयोग करो।" विक्रम की आँखें खुल गईं।

विश्वनाथ का उपदेश सुनकर विक्रम ने आगे क्या किया होगा?

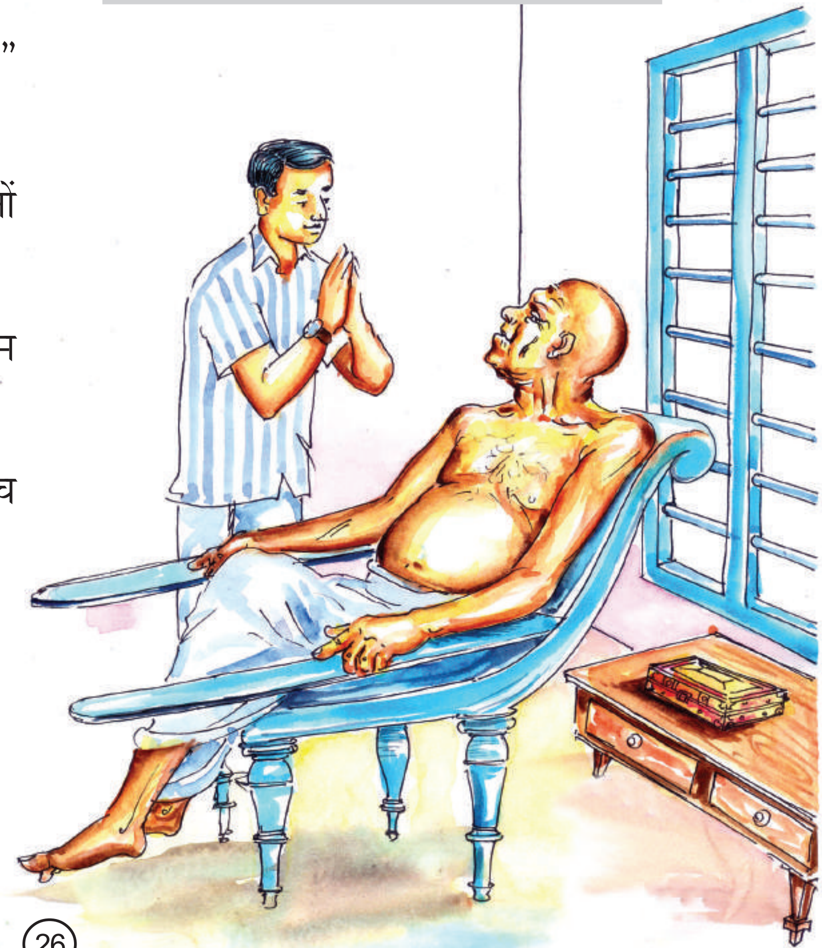

घटनाएँ लिखें।

- मित्रों से जल्दी धन कमाने का उपाय पूछा।
- विश्वनाथ ने शरीर के अंग बेचने को कहा।

....

....

किसने कहा?

किसान

विक्रम

विश्वनाथ

जैसे: विक्रम ने कहा कि मैं बहुत गरीब हूँ।

गाँव के उस पार एक सज्जन रहते हैं।

तुम वसंतनगर जाओ।

एक करोड़ रुपए मिलने पर भी मैं ऐसा नहीं करूँगा।

....

....

....

लिखें।

- विश्वनाथ का उपदेश सुनकर विक्रम की आँखें खुल गईं। विक्रम की उस दिन की डायरी तैयार करें ।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

डायरी में...

तारीख लिखी है।	
उपदेश का असर है।	
विचार और मनोभाव प्रकट है।	
आत्मनिष्ठ भाषा है।	

कहानी को आगे बढ़ाएँ।

कोशिश करनेवालों की

हरिवंशराय बच्चन

हरिवंशराय बच्चन
(1907-2003)

हिंदी कविता क्षेत्र में छायावादी कवि तथा हालावाद के प्रवर्तक।

पूरा नाम हरिवंशराय श्रीवास्तव बच्चन।

1976 में पद्‌मभूषण से सम्मानित।

मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण आदि प्रमुख रचनाएँ।

आत्मकथा चार भागों में प्रकाशित- क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्‌वार से सोपान तक।

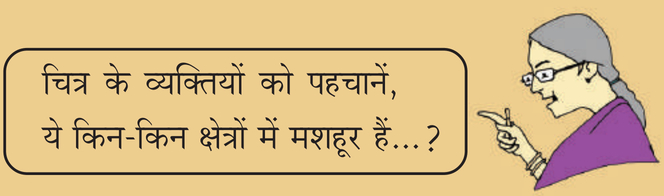

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

‘लहर’ और ‘नौका’ किन-किनके प्रतीक हैं?

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

‘चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।’ आशय व्यक्त करें।

चींटियों से हमें कौन-सी प्रेरणा मिलती है?

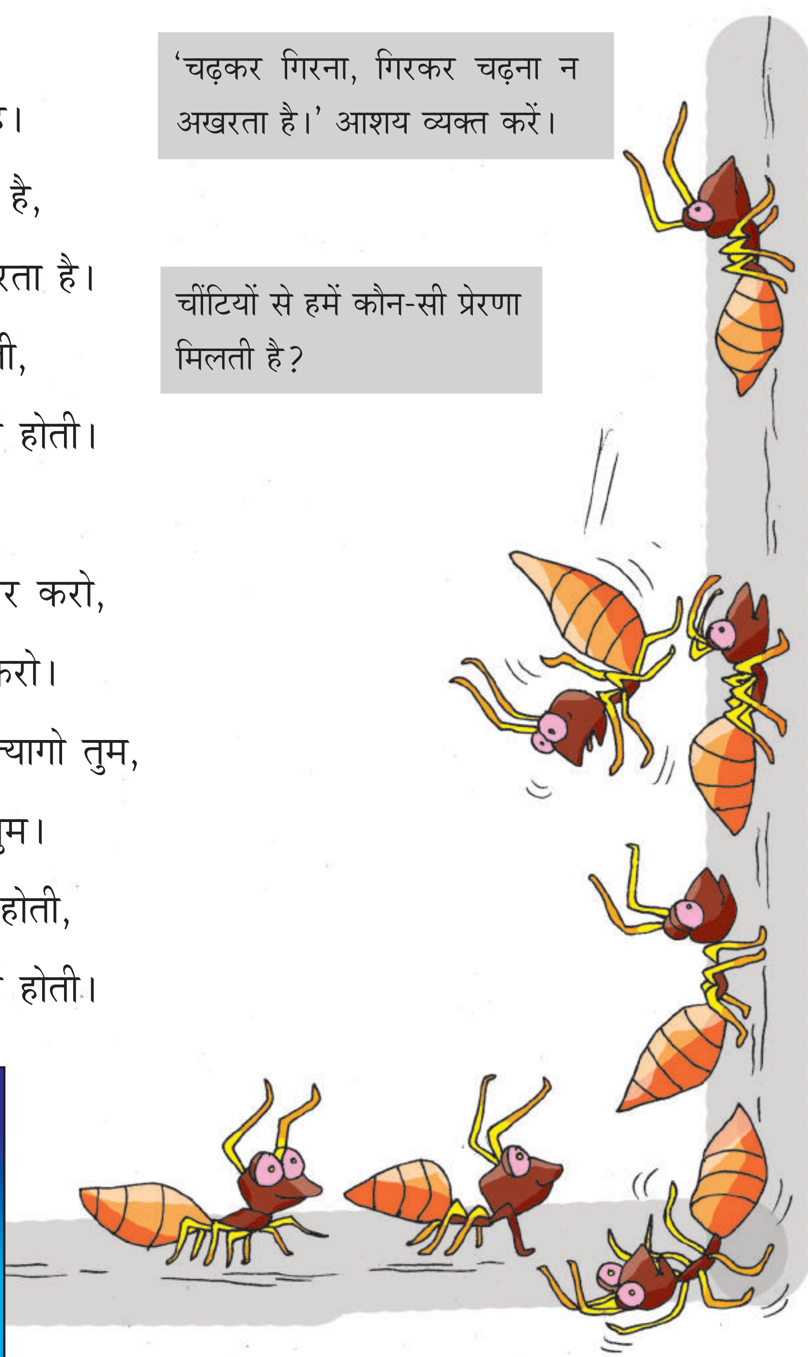

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

कविता से तुकवाले पद चुनें।

जैसे :

चलती है - फिसलती है ।

....

....

....

....

सफलता के साधन चुनें।

- सार्थक परिश्रम करना चाहिए।
- आत्मविश्वास होना चाहिए।
- काम किए बिना आराम से रहना चाहिए।
- चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए।
- असफलता को अपनी कमी माननी चाहिए।

कविता के लिए अलग शीर्षक दें, समर्थन करें।

निम्नलिखित आशयवाली पंक्तियाँ चुनें।

- डरकर बैठने से काम नहीं चलता।
- अपनी कमियों को पहचानकर सुधार करें।

चुनौतियों का सामना करके जीवन में सफलता पाए व्यक्तियों की सूची बनाएँ, उनका कार्यक्षेत्र लिखें। आई.सी.टी की मदद लें।

मेहनत के महत्व पर लघु लेख तैयार करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

मेहनत

- समाज सेवा में
- निरंतर
- पेशे में
- जीवन लक्ष्य
- शिक्षा में
- अपनी उन्नति
- समाज की उन्नति
- गुण
- अलसता का शत्रु

लेख में...

भूमिका है।	
मेहनत के महत्व और विशेषताओं का उल्लेख है।	
अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।	
क्रमबद्धता है।	

अधिगम उपलब्धि

- हास्य-व्यंग कहानी पढ़कर आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कहानी सृजन करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- डायरी लिखने की अवधारणा प्राप्त करता है।
- कविता वाचन करके आस्वादन करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कविता ताल-लय के साथ आलापन करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- लेख लिखने की अवधारणा प्राप्त करता है।

शब्दार्थ

अखरना	-	बुरा लगना
अनमोल	-	अमूल्य,कीमती
आँखें खुलना	-	होश में आना, समझना
आखिर	-	अंत में होने वाला
आराम से रहना	-	चैन से रहना
आसान	-	सरल
कमाना	-	उपार्जन करना
कमी	-	न्यूनता
कोशिश	-	परिश्रम
खज़ाना	-	कोष
खरीदना	-	मोल करना
गरीब	-	निर्धन
चुनौती	-	ललकार
चैन	-	आराम
ठोस	-	पक्का, निश्चित
डर	-	भय
ढेर सारा	-	बहुत अधिक
तरीका	-	उपाय
त्यागना	-	छोड़ना
दाना	-	अनाज
दीवार	-	भित्ति
द्वार	-	दरवाज़ा
नींद	-	निद्रा
नौका	-	नाव
पार	-	किनारा
फिसलना	-	सरकना
बेकार	-	निरर्थक
बेचना	-	बिक्री करना
भागना	-	पलायन करना
मूल्यवान	-	कीमती
मेहनत	-	परिश्रम
रग	-	नाड़ी
लहर	-	तरंग
संघर्ष	-	टकराव
सज्जन	-	भला आदमी
हार	-	पराजय
हैरान होना	-	आश्चर्य चकित होना

इकाई तीन

ज़रूरी खुराक़

बलराम अग्रवाल

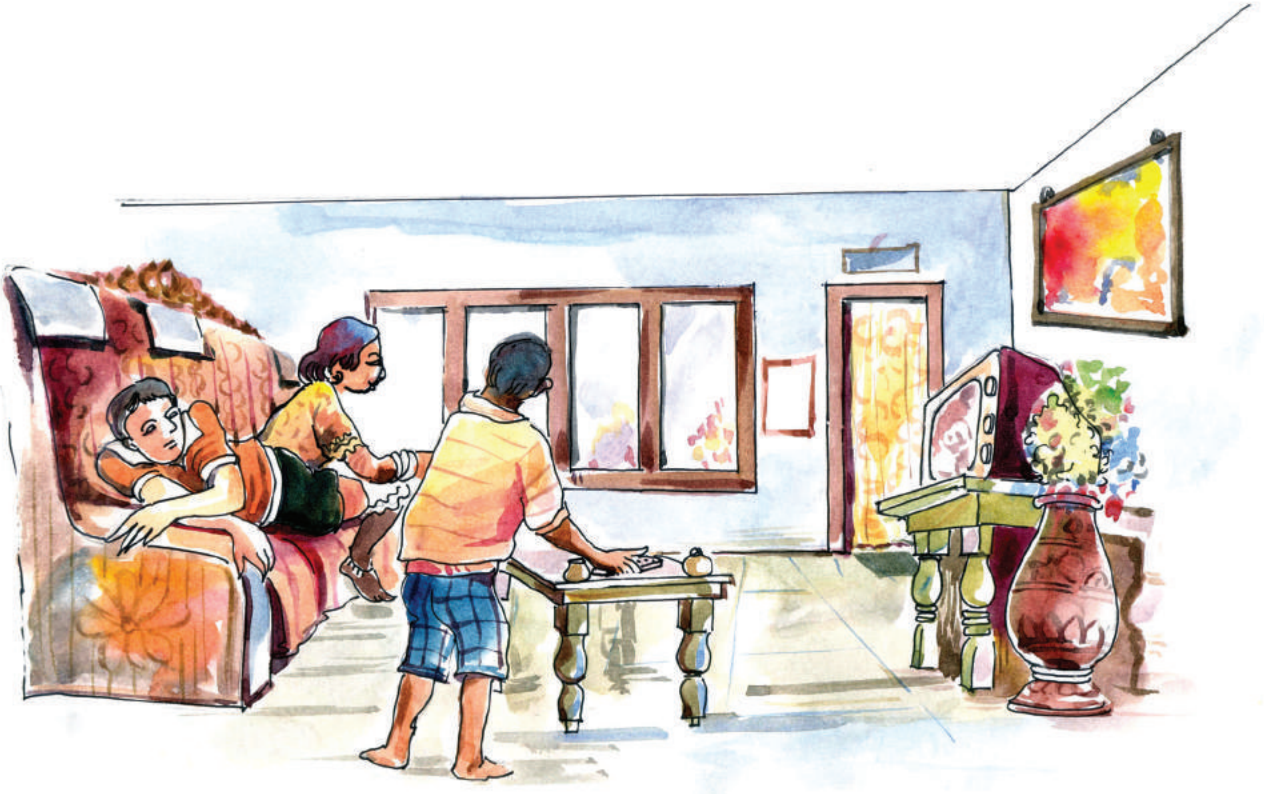

चित्र में क्या-क्या हो रहे हैं?
आपको कौन-सा कार्यक्रम पसंद है?

पात्र

लड़का - 1 (हिंदी समाचार पत्र-1) तथा अंकित

लड़की - 1 (हिंदी समाचार पत्र-2) तथा शिवानी

लड़का - 2 (अंग्रेज़ी समाचार पत्र) तथा शुभम्

लड़की - 2 टेलिविज़न समाचार वाचिका

मम्मी

पापा

घर के ड्राइंग रूम में बैठे अंकित और शिवानी टेलिविज़न में कोई कार्यक्रम देख रहे हैं। बाहर से शुभम् आता है और मेज़ पर से रिमोट उठाकर टेलिविज़न का चैनल बदलने लगता है। अंकित और शिवानी उसपर चिल्ला उठते हैं।

अंकित और शिवानी - (एक साथ चीखते हैं)

शुभा...........म्!!

शुभम् - क्या हुआ?

शिवानी - हुआ तेरा सिर। हम दो लोग जब पहले से ही टॉम एंड जेरी देख रहे हैं तो तू चैनल क्यों बदल रहा है?

शुभम् - इसलिए कि तुम लोगों को कभी-कभी यह भी जान लेना चाहिए कि बाकी दुनिया में क्या-क्या हो रहे हैं।

अंकित - उन सबके लिए तू तो है न मेरे भाई। तू अखबार पढ़कर हमें बता दिया कर।

शिवानी - हाँ। और अब अच्छे बच्चे की तरह टॉम एंड जेरी लगा दे या रिमोट हमें पकड़ा और बाहर का रास्ता नाप।

शुभम् - कभी-कभी न्यूज़ या डिस्कवरी या दूसरे चैनल भी देखते रहना चाहिए।

अंकित - दूसरे चैनल माइ फुट। लिखाई-पढ़ाई से थके मेरे दिमाग को टॉम एंड जेरी या कार्टून चैनल के अलावा दूसरा कुछ चाहिए ही नहीं।

शुभम् - यानी कि तुम्हें उस खुराक़ की ज़रूरत है जो पापा ने कल मम्मी को पिलाई थी।

'खुराक़ पिलाना' से तात्पर्य क्या है?

अंकित और शिवानी - (आश्चर्य से एक साथ) मम्मी को खुराक़?

शुभम् - हाँ।

शिवानी - खुलकर बता न।

शुभम् - खुलकर? लो सुनो...

प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से दृश्य बदलता है। सोफे पर बैठी मम्मी कोई टी.वी. सीरियल देखने में मस्त है और बीच-बीच में कभी गुस्से के, तो कभी प्रसन्नता के भाव, दिखाती है, जिससे पता चलता है कि वह सीरियल को विभोर होकर देख रही है। यह सारा दृश्य मौनपूर्वक चल रहा है।

हिंदी समाचार-पत्र-1 के रूप में लड़का-1 बोलता हुआ मंच पर एक ओर से दूसरी ओर गुज़र जाता है-

लड़का 1 - जापान में जबर्दस्त भूकंप। हज़ारों लोगों की मौत। करोड़ों की संपत्ति का नुकसान।

अंग्रेज़ी समाचार पत्र के रूप में लड़का 2 बोलता हुआ मंच पर दूसरी ओर से पहली ओर को गुज़र जाता है-

लड़का *2* - मेस्सिव अर्थक्वैक हिट जैपान। अबाउट 400 पीपुल आर डैड एंड 500 मिसिंग... हैवी लॉस ऑफ़ नेशनल प्रोपर्टी...

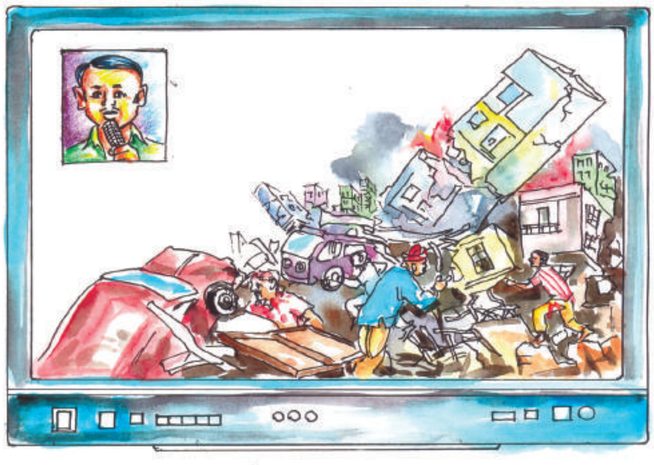

हिंदी समाचार पत्र-2 - के रूप में लड़की 1 बोलती हुई मंच के निचले सिरे से ऊपरी सिरे की ओर गुज़र जाती है।

लड़की 1 - आज सुबह लगभग 5 बजे जापान का टोक्यो शहर जबर्दस्त भूकंप के कारण तबाह हो गया है। कितनी ही इमारतें ज़मीन में धँस गई हैं। हज़ारों लोग मलबे के नीचे दबे पड़े हैं।

इसी बीच 'पापा' का मंच पर प्रवेश। कोने में रखे टेलिविज़न के सामने रखी मेज़ पर से रिमोट उठाकर चैनल बदलने लगते हैं।

मम्मी - (हकबकाकर, गुस्से में) अरे-अरे, यह क्या कर रहे हैं?

पापा - न्यूज़ चैनल पर लगा रहा हूँ।

मम्मी - हे भगवान! मनोरंजन चैनलों से इतनी चिढ़ क्यों है आपको?

पापा	-	(रिमोट से चैनल बदलते हुए) निठल्ला, नकारा और बुद्धिहीन बना डालने वाले चैनलों को मनोरंजन चैनल समझना पता नहीं कब छोड़ोगी तुम?
मम्मी	-	फिफ्टी वन पर लगाओ... न्यूज़ चैनल फिफ्टी के बाद ही हैं सारे। नाश कर दिया सारे सीरियल का...।

पापा न्यूज़ चैनल पर पहुँच जाते हैं।

समाचार वाचिका	-	पूरे टोक्यो शहर में बिजली की सप्लाई ठप्प पड़ गई है और टावर्स टूट गए हैं, जिसके कारण शहर का संपर्क बाकी जगहों से खत्म हो गया है। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 7.1 मापी गई। जापान में पिछले माह भी भूकंप आया था।
पापा	-	(मम्मी से) सुन रही हो?

मम्मी - यह कब हुआ?

पापा - घर में तीन-तीन अखबार आते हैं– दो हिंदी के और एक अंग्रेज़ी का। तीनों चीख-चीखकर सुबह से यह समाचार सुना रहे हैं, लेकिन आप हैं कि...

मम्मी - चीख-चीखकर सुना रहे हैं! मुझे तो एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया!!

पापा - सुबह से शाम तक मनोरंजन में डूबे रहने वाले लोगों को दर्द में डूबे लोगों की चीखें सुनाई नहीं देतीं, रमाजी।

मम्मी - कैसी बातें करते हैं।

पापा - ठीक कह रहा हूँ। (*हाथ से इशारा करके*) इतने मोटे-मोटे अक्षरों में हेड़ न्यूज़ छपी हैं सभी अखबारों में। आँख उठाकर कभी देखती हो अखबार की ओर?

मम्मी - घर के काम-काज से फुरसत मिले, तभी तो कोई अखबार देखें-पढ़ें...।

पापा - ठीक कहती हो। उल्टे-सीधे सीरियल्स तो तुम जैसे घर के काम करते-करते देखती रहती हो।

मम्मी - बस। काम-काज में चाहे जितना खटे, मनोरंजन के आस-पास न फटक जाए घर की औरत।

पापा	-	रमा... रमा... तुम मेरी बात को गलत समझ रही हो। मेरे कहने का मतलब है कि न तो घर के काम-काज में और न ही अपने मनोरंजन में हमें इस कदर डूब जाना चाहिए कि हम अपने आसपास के लोगों के दुख-दर्द देख ही न पाएँ।
मम्मी	-	आयम सॉरी।
पापा	-	जापान में आज सुबह सैकड़ों लोग मौत के मुँह में समा गए। सैकड़ों लोग लापता हैं। जान और माल दोनों का नुकसान हुआ है। माना कि जापान एक दूसरा देश है लेकिन हैं तो सब मनुष्य ही।
मम्मी	-	ठीक कहते हो। मुझे अपने मनोरंजन तक ही कभी भी सीमित नहीं रहना चाहिए था।
पापा	-	सिर्फ तुम्हें नहीं, (दर्शकों की ओर इशारा करके) हम सभी को।

दृश्य समाप्त

बताएँ।

मंचन में आप किसकी भूमिका अदा करना चाहते हैं? क्यों?

आँखों देखी रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

मान लें, आप संवाददाता हैं। टी.वी. समाचार के लिए भूचाल से संबद्ध आँखों देखी रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

संवाद चलाएँ।

'समाज में संचार माध्यमों का असर'

- विभिन्न माध्यम
- मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक
- समाज के लिए लाभदायक
- समाज के लिए हानिकारक
- उपयोग में सतर्कता

पोस्टर तैयार करें।

आपकी कक्षा 'ज़रूरी खुराक़' का मंचन करने जा रही है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।

मंचन करें।

पूरी तैयारी के साथ एकांकी का मंचन करें।

आइ.सी.टी. की भी मदद लें।

ध्यान दें।

लेटे हुए टी.वी. मत देखिए।

निकट से टी.वी. मत देखिए।

....

सूचनापट तैयार करें।

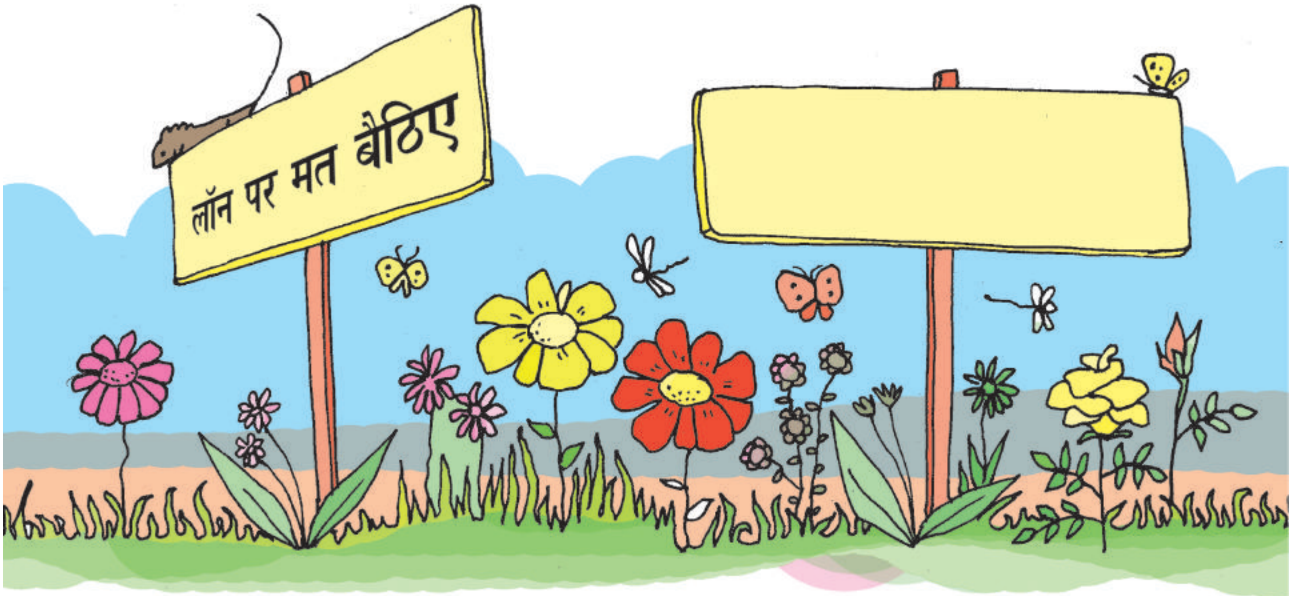

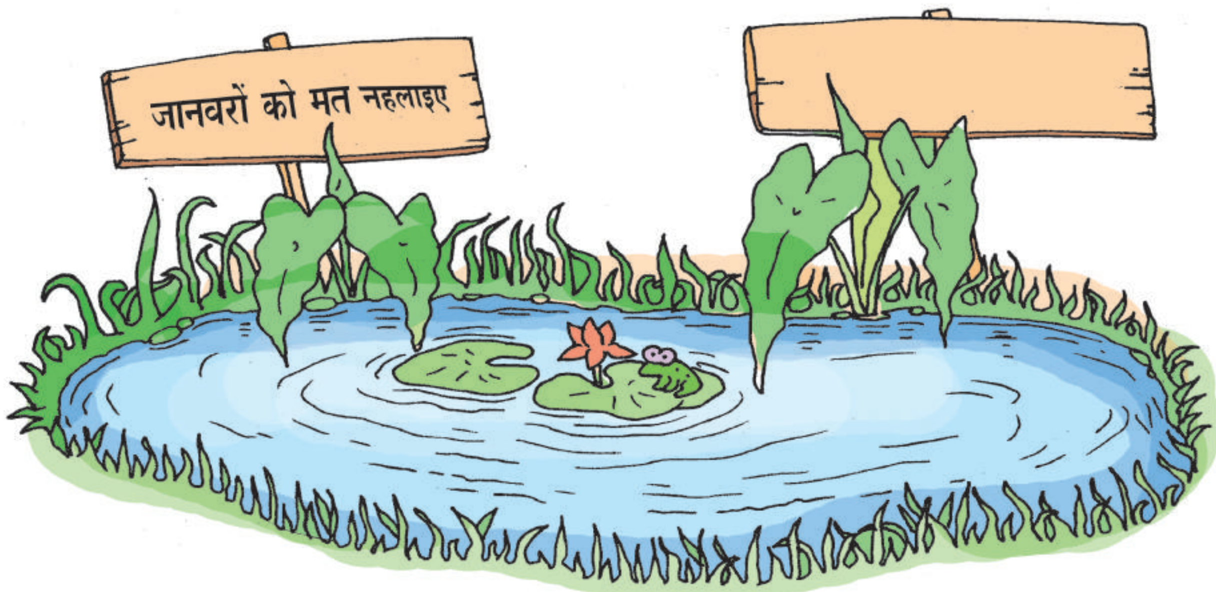

पढ़ें, भरें...

एकांकी शुरू होनेवाला है...

- दर्शक सभागृह में प्रवेश करने लगे।
- वे कुरसियों पर बैठने लगे।
- घंटी बजने लगी।

....

....

एकांकी समाप्त हुआ...

- पर्दा गिरने लगा।

....

....

....

अनुवाद करें।

सूरज निकलने लगा।

पक्षी चहचहाने लगे।

हवा बहने लगी।

कलियाँ खिलने लगीं।

एक दौड़ ऐसी भी

कई साल पहले ओलिंपिक खेलों के दौरान एक विशेष दौड़ होने जा रही थी। सौ मीटर की इस दौड़ में एक गज़ब की घटना हुई। नौ प्रतिभागी शुरुआत की रेखा पर तैयार खड़े थे। उन सभी को कोई-न-कोई शारीरिक विकलांगता थी।

यहाँ प्रतिभागियों का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है?

सीटी बजी, सभी दौड़ पड़े। बहुत तेज़ तो नहीं पर उनमें जीतने की होड़ ज़रूर तेज़ थी। सभी जीतने की उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। तभी एक छोटा लड़का ठोकर खाकर लड़खड़ाया, गिरा और रो पड़ा। उसकी आवाज़ सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ देखने लगे कि क्या हुआ? फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की मदद के लिए उसके पास आने लगे। सब के सब लौट आए। उसे दोबारा खड़ा किया। उसके आँसू पोंछे, धूल साफ की। लड़के की दशा देख एक बच्ची ने उसे अपने गले से लगा लिया, और उसे प्यार से चूम लिया, यह कहते हुए कि, 'अब ठीक हो जाएगा'।

प्रतिभागियों का व्यवहार ऐसा न होता तो क्या होता?

फिर तो सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ मिलकर दौड़ लगाई। सब के सब अंतिम रेखा तक एक साथ पहुँच गए। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, इस सवाल के साथ कि सब के सब एक साथ बाजी जीत चुके हैं, इनमें से किसी एक को स्वर्ण पदक कैसे दिया जा सकता है। निर्णायकों ने भी सबको स्वर्ण पदक देकर समस्या का शानदार हल ढूँढ निकाला। सब के सब एक साथ विजयी इसलिए हुए कि उस दिन दोस्ती का अनोखा दृश्य देख दर्शकों की तालियाँ थमने का नाम नहीं ले रही थीं।

चर्चा करें...

आपको कभी ऐसा अनुभव हुआ है?

आज के सामाजिक संदर्भ में ऐसी घटनाओं की भूमिका क्या है?

दौड़ प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों ने स्वर्ण-पदक जीता। इसपर समाचार तैयार करें।

समाचार में

स्थान का उल्लेख है।
वस्तुनिष्ठ एवं संक्षिप्त विवरण है।
शीर्षक जिज्ञासायुक्त है।

पढ़ें।

ओलिंपिक खेलों **के दौरान** एक विशेष दौड़ होने जा रही थी।

स्वतंत्रता संग्राम **के दौरान** गाँधीजी केरल आए थे।

लिखें।

'के दौरान' जोड़कर वाक्यों को मिलाएँ।

आज प्रेमचंद जयंती है।

कहानी सृजन प्रतियोगिता का आयोजन होगा।

राष्ट्रीय खेल होनेवाला है।

दीपशिखा प्रयाण का आयोजन होगा।

पढ़ें, समझें।

मेरा भाई पाँचवें दर्जे में है।

तुम **मेरे** साथ मज़ाक तो नहीं कर रही हो?

तुम्हें **मेरी** चिट्ठी मिल गई?

तुम **मेरी** बात को गलत समझ रही हो।

सही जोड़े बनाएँ।

साल	आँसू	दोस्ती	अनोखा
मित्रता	छोटा	वर्ष	अश्रु
शुरुआत	मदद	विचित्र	नन्हा
विशेष	आरंभ	सहायता	बीमारी
बाजी	खास	प्रश्न	प्यार
होड़	स्नेह	रोग	सवाल

जैसे : साल - वर्ष

पढ़ें, समझें।

उसकी आवाज़ सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ **देखने लगे** कि क्या हुआ?

फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की मदद के लिए उसके पास **आने लगे।**

लड़के की दशा देख एक बच्ची ने उसे **गले से लगा लिया।**

सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और मिलकर **दौड़ लगाई।**

नमूने के अनुसार लिखें।

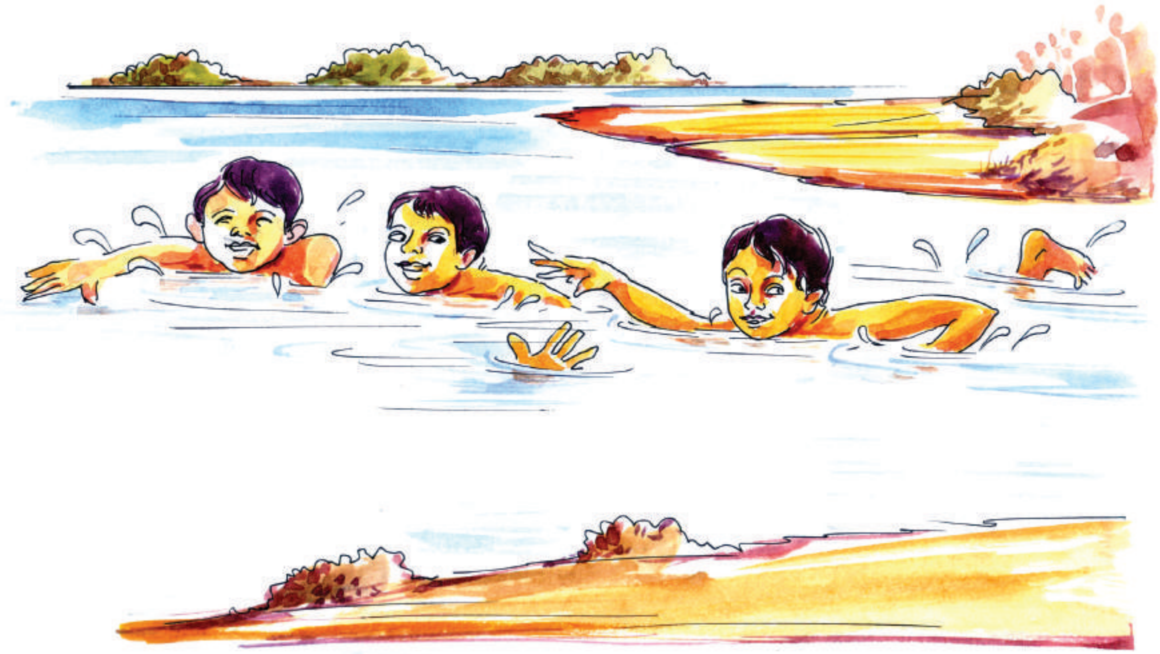

लड़के तैर रहे हैं।

....

....

नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलकर लिखें।

- विक्रम विश्वनाथ से मिला।
- उसका उपदेश सुना।
- उसकी आँखें खुलीं।
- मेहनत करके धन कमाया।
- सुख से रहने लगा।

जैसे:

विक्रम विश्वनाथ से मिलेगा।

....

....

....

....

नमूने के अनुसार वाक्यों को मिलाएँ।

- हमारे रूप रंग अलग हैं।
  हम सब भारतीय हैं।
  हमारे रूप रंग अलग हैं लेकिन हम सब भारतीय हैं।

- नंदु तितली के पीछे दौड़ा।
  वह पकड़ न पाया।

  ....

अधिगम उपलब्धि

- एकांकी वाचन करके आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- संवाद में भाग लेने की क्षमता प्राप्त करता है।
- रिपोर्टिंग की शैली समझता है।
- पोस्टर तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- लेख पढ़कर आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- समाचार तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।

शब्दार्थ

आँसू	-	अश्रु
इमारत	-	विशाल भवन
इशारा	-	संकेत
उत्सुकता	-	प्रबल इच्छा
खत्म होना	-	समाप्त होना
गजब	-	विचित्र
गुस्सा	-	क्रोध
चिढ़	-	नाराज़गी
चिल्लाना	-	शोर मचाना
चीखना	-	चिल्लाकर बोलना
ज़बर्दस्त	-	जो बहुत दृढ़, मज़बूत हो
ठप्प	-	पूर्णतः बंद
ठोकर खाना	-	टकराकर गिरना
डूबे रहने वाला	-	लीन रहने वाला
तबाह होना	-	नष्ट होना
दोबारा	-	दूसरी बार
धँस जाना	-	मिट्टी में दब जाना
निठल्ला	-	निकम्मा, अनुपयोगी
नुकसान	-	हानि
पैमाना	-	मानदंड
फुरसत	-	अवकाश, खाली समय
मंत्रमुग्ध होना	-	जड़वत होना
मलबा	-	गिरे हुए मकान का अवशिष्ट
मस्त	-	मदयुक्त
मापना	-	नापना
समा जाना	-	भरना
लड़खड़ाना	-	डगमगाकर गिरना
विभोर होकर	-	मग्न होकर
हकबकाना	-	घबराना
हल	-	समाधान
होड़	-	हठ

इकाई चार

राजा का दरवाज़ा

सुबीर शुक्ला

एक था राजा। उसने चाहा कि उसके महल में एक ऐसा दरवाज़ा हो, जिससे सिर्फ़ वही घुस पाए, कोई और नहीं। उसने अपने मंत्री से कहा, "मुझे एक ऐसा दरवाज़ा बनाकर दो जो मेरी ही शक्ल देखने पर खुले, ताकि उससे सिर्फ़ मैं ही घुस पाऊँ, कोई और नहीं।"

राजा ने शक्ल देखने पर खुलनेवाला दरवाज़ा बनाने का निर्णय क्यों लिया होगा?

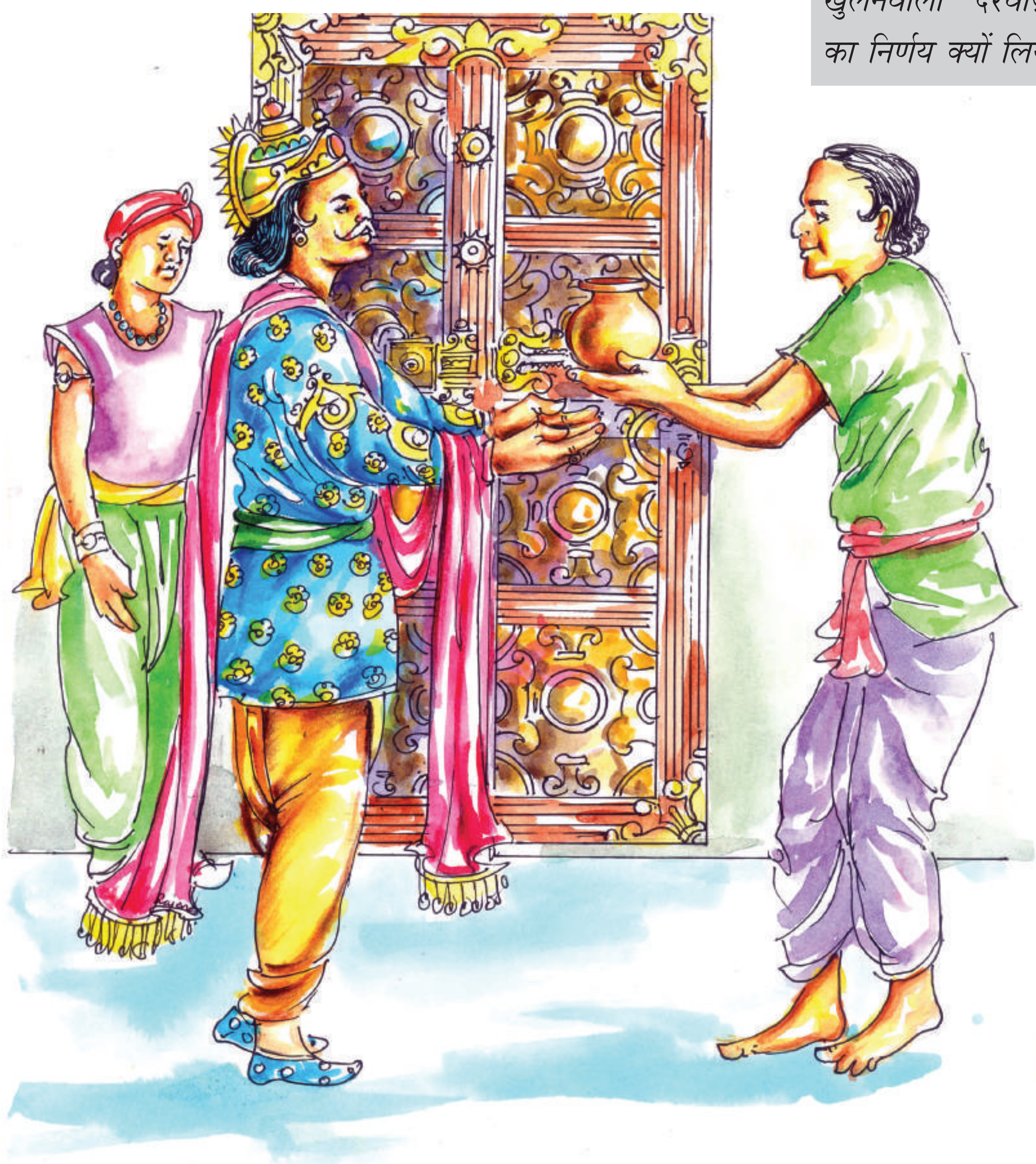

मंत्री ने एक ऐसा ही दरवाज़ा बनवाया। तब राजा ने सबको बुलाकर कहा, "है कोई जो घुस सकता है इस दरवाज़े से?"

एक आदमी आया। उसके हाथ में राजा की तस्वीर थी। तस्वीर में राजा की शक्ल देखकर दरवाज़ा खुल गया। राजा गुस्से में बाल खींचता रह गया।

राजा ने मंत्री से कहा, "मुझे एक ऐसा दरवाज़ा बनाकर दो जो सिर्फ मेरी ही आवाज़ से खुले।"

मंत्री ने ऐसा दरवाज़ा बनवाया। राजा ने फिर सबको बुलाकर पूछा, "है कोई जो घुस सकता है इस दरवाज़े से?"

वही आदमी आया। उसने राजा को बहुत ठंडा पानी पिलाया। फिर कहा, "अगर मैं इस दरवाज़े से नहीं घुस सकता तो राजा भी नहीं घुस सकता है।"

ठंडे पानी से राजा का गला खराब हो गया। उसकी आवाज़ ही नहीं निकली। राजा भी दरवाज़े से अंदर नहीं जा पाया। वह गुस्से से कूदता रह गया। फिर राजा ने ऐसा दरवाज़ा बनवाया जो सिर्फ उसके जूतों की आहट से ही खुले। लेकिन उस आदमी ने ज़मीन पर कालीन बिछा दिया, जिससे जूतों की आहट ही नहीं हुई।

राजा ने मंत्री से कहा, "मुझे एक ऐसा दरवाज़ा बनाकर दो जो सिर्फ मेरे ही शरीर की गंध से खुले।"

यदि राजा ठंडा पानी न पीता तो क्या होता?

लेकिन इस बार फिर वही आदमी आया और राजा के पहने हुए कुछ कपड़े हाथ में उठाकर दरवाज़े के पास ले गया तो दरवाज़ा खुल गया।

फिर? फिर आगे क्या हुआ? उन दोनों का मुकाबला न जाने कब तक चलता रहा। मुझे तो यहीं तक की घटनाओं का पता है। आगे के बारे में तो अब तुम्हें ही सोचकर बताना होगा। तो बताओ फिर आगे क्या हुआ होगा?

सही मिलान करें।

राजा ने गंध से खुलने वाला दरवाज़ा बनवाया।	हाथ में राजा की तस्वीर लेकर आया।
आवाज़ से खुलने वाला दरवाज़ा बनवाया।	आदमी ने ज़मीन पर कालीन बिछा दिया।
जूतों की आहट से खुलने वाला दरवाज़ा बनवाया।	राजा को ठंडा पानी पिलाया।
शक्ल देखने पर खुलने वाला दरवाज़ा बनवाया।	कपड़े हाथ में उठाकर दरवाज़े के पास ले गया।

राजा के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

मेरी टिप्पणी में...

राजा की विशेषताएँ हैं।
अपना मत व्यक्त किया है।
उचित शीर्षक है।

कहानी को आगे बढ़ाएँ।

सहायक बिंदु :

- अपनी उँगलियों से छूने से
- अपनी चुटकी बजाने से
- कूट भाषा के प्रयोग से
- कूट संख्या के प्रयोग से

- पहले दरवाज़े से राजा का काम नहीं चला। इसलिए दूसरी बार मंत्री को बढ़ई के पास जाना पड़ता है। उस प्रसंग में दोनों के बीच का वार्तालाप तैयार करें।

पढ़ें, भरें।

जैसे : माँ ने बेटे को सुनाया।
बेटे ने सुना।

पिता ने बेटे को लिखाया।

....

....

बेटे ने पढ़ा।

कहानी को एकांकी का रूप दें, मंचन करें।

वाक्य के रेखांकित अंश की विशेषता पहचानें, पाठ भाग से ऐसे वाक्य छाँटकर लिखें।

एक आदमी <u>आया</u>।

....

....

....

पढ़ें, समझें।

मुझे तुम्हारी चिट्ठी समझ में नहीं आई।
मुझे जल्दी धन कमाने का उपाय बताइए।
मुझे तो एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया।
मुझे शक्ल देखकर खुलने वाला दरवाज़ा बना दो।
मुझे कल ही तुम्हारा पत्र मिला था।

ध्यान से पढ़ें।

आदमी **के** हाथ में राजा की तस्वीर थी।
राजा **की** तस्वीर देखकर दरवाज़ा खुल गया।
राजा **की** आवाज़ ही नहीं निकली।
राजा और आदमी दोनों **का** मुकाबला चलता रहा।

अनुवाद करें।

मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। इसके मस्तक पर राजाओं की-सी कलगी है। इसकी पूँछ लंबी और सुंदर है। मोर पक्षियों का राजा तथा जंगल का देवता कहा जाता है।

तब याद तुम्हारी आती है...

रामनरेश त्रिपाठी

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर
कुछ गीत खुशी के गाती हैं,
कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल
जब दुनिया पर मुसकाती हैं,
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।।

रामनरेश त्रिपाठी

1881-1962

उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के कोयरीपुर गाँव में जन्म। कविताओं के अलावा उपन्यास, नाटक, आलोचना और बाल साहित्य की रचना की। प्रमुख कृतियाँ : मिलन, पथिक, स्वप्न तथा मानसी।

दरवाज़ा, घर इन शब्दों का प्रयोग कवि ने किस अर्थ में किया है?

'महफ़िल' का प्रयोग
कवि ने क्यों किया है ?

चुपचाप चमकते तारों की
महफ़िल जब रात सजाती है,
जब चाँद शान से उठता है
दिल की दुनिया जग जाती है।
कुछ पता नहीं लेकिन ज़रूर
वह संदेशा कुछ पाती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं
बिजली चम-चम कर जाती है,
मैदानों में, वन-बागों में
जब हरियाली लहराती है,
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से
मस्ती ढोकर लाती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है।

वर्षाकाल का वर्णन कवि ने
किस प्रकार किया है ?

समान अर्थवाले शब्द कविता से ढूँढ़ें।

प्रातः :
संसार :
सुगंध :
नक्षत्र :
गौरव :
मतवालापन :

लिखें।

जैसे : प्रभात की शोभा बढ़ाने वाली चीज़ें-
चिड़ियाँ, चिड़ियों के गीत, कलियाँ और उनकी खुशबू...

रात की शोभा बढ़ाने वाली चीज़ें।

....

भाव लिखें।

चुपचाप चमकते तारों की
महफ़िल जब रात सजाती है,
जब चाँद शान से उठता है
दिल की दुनिया जग जाती है,
कुछ पता नहीं लेकिन ज़रूर
वह संदेशा कुछ पाती है।

पंक्तियाँ जोड़ें।

जैसे : जब नन्ही मुन्नी मुसकाती है
दिल की दुनिया जग जाती है।

....
दिल की दुनिया जग जाती है।

....
दिल की दुनिया जग जाती है।

ओस की बूँदें
ठंडी हवा बहती है
फूल खिलते

मज़ा लें।

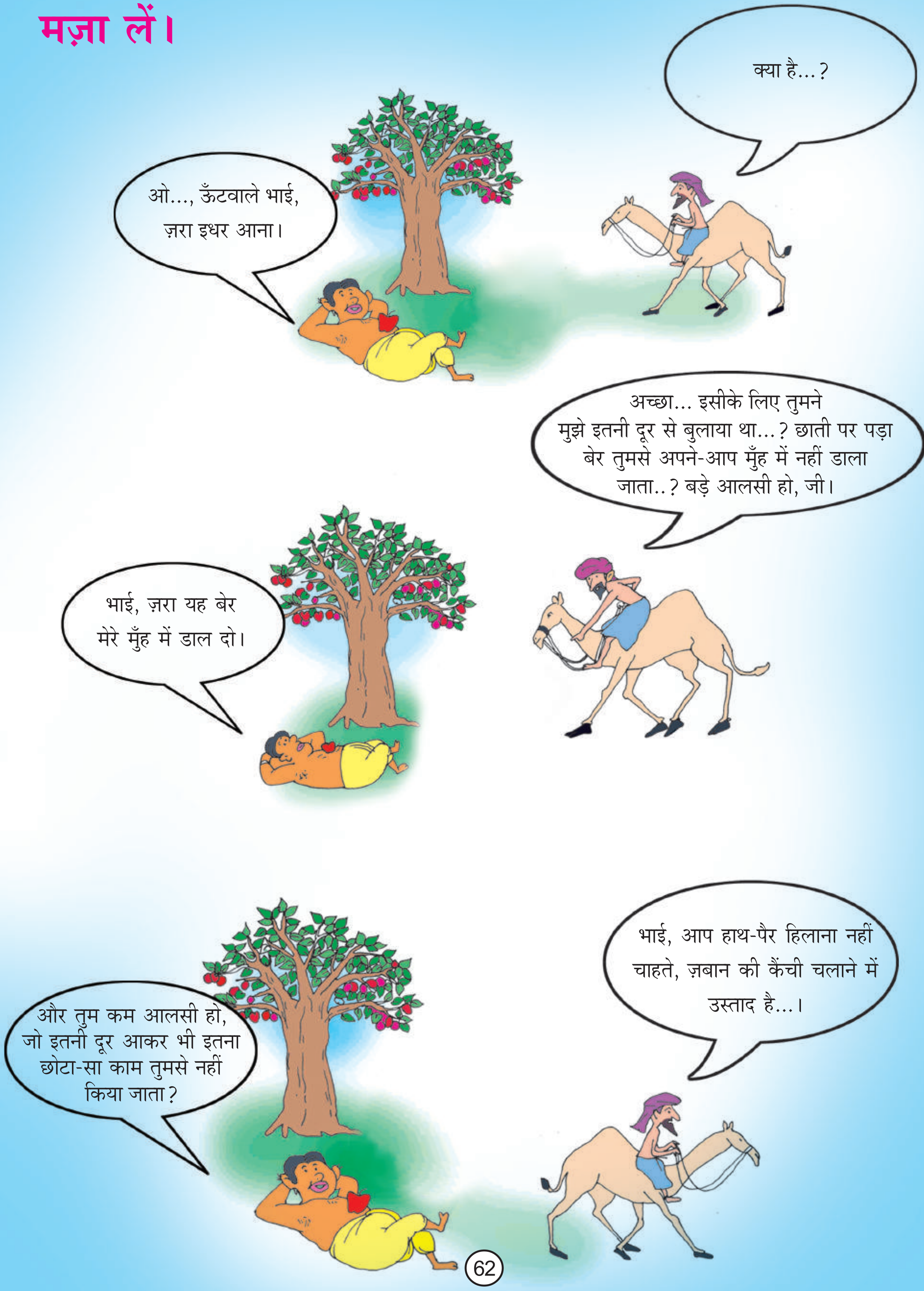

ओ..., ऊँटवाले भाई, ज़रा इधर आना।
क्या है...?
भाई, ज़रा यह बेर मेरे मुँह में डाल दो।
अच्छा... इसीके लिए तुमने मुझे इतनी दूर से बुलाया था...? छाती पर पड़ा बेर तुमसे अपने-आप मुँह में नहीं डाला जाता..? बड़े आलसी हो, जी।
और तुम कम आलसी हो, जो इतनी दूर आकर भी इतना छोटा-सा काम तुमसे नहीं किया जाता?
भाई, आप हाथ-पैर हिलाना नहीं चाहते, ज़बान की कैंची चलाने में उस्ताद है...।

शब्दार्थ

अंदर	-	भीतर
आवाज़	-	ध्वनि
आहट	-	पद ध्वनि, पैरों की आवाज़
उस्ताद	-	गुरु
कूदना	-	उछलना
कैंची	-	कतरनी
खराब	-	बरबाद
गला	-	गरदन
गुस्सा	-	क्रोध
घुसना	-	प्रवेश करना
ज़बान	-	जीभ
ज़बान की कैंची चलाना	-	बेकार बातें करना
छाती	-	सीना
ज़मीन	-	भूमि
टपकना	-	बूँद-बूँद गिरना
तस्वीर	-	चित्र
बहस	-	तर्क-वितर्क, चर्चा
बाल खींचना	-	गुस्से से रह जाना
बेर	-	एक विशेष फल
मस्ती	-	मतवालापन
महफ़िल	-	सभा, नाच-रंग का स्थान
मुकाबला	-	बराबरी
याद	-	स्मरण
शक्ल	-	रूप, आकृति
शान	-	गौरव
संदेशा	-	संदेश
सिरजनहार	-	स्रष्टा

अधिगम उपलब्धि

- कहानी पढ़कर आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कहानी आगे बढ़ाने की क्षमता प्राप्त करता है।
- चरित्र पर टिप्पणी लिखने की अवधारणा प्राप्त करता है।
- अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कविता वाचन करके आस्वादन और आलाप करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कविता के साथ पंक्तियाँ जोड़ने की क्षमता प्राप्त करता है।

इकाई पाँच

आसमान के लिए...

विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय नारियों ने महान उपलब्धियाँ हासिल की हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में सफलतापूर्वक प्रयोग करके भारत के नाम को चार चाँद लगाने वाली नारी हैं कल्पना चावला।

विज्ञान के क्षेत्र के अन्य प्रसिद्ध भारतीयों के नाम बताएँ।

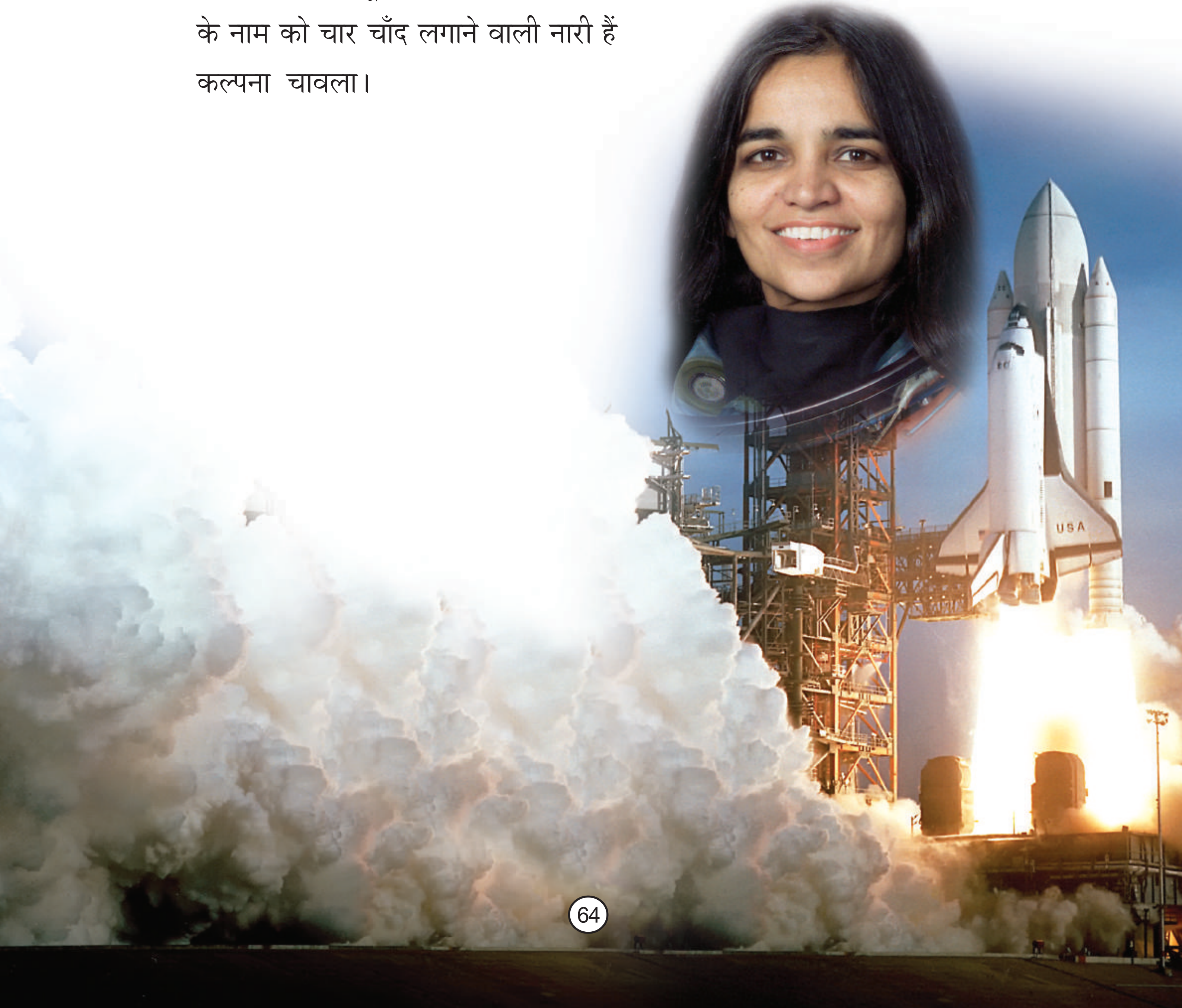

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल जिले में हुआ। वे बाल्यकाल से ही परिश्रमी और प्रतिभाशालिनी थीं। कल्पना चावला की कल्पनाओं में आकाश और आकाश के पार का संसार रहता था। उनकी कल्पनाओं ने ही उन्हें अंतरिक्ष यात्रा कराई। उनके पिता बनारसी लाल चावला की इच्छा थी कि पुत्री अध्यपिका या डॉक्टर बने। परंतु कल्पना के मन में अंतरिक्ष जगत के रहस्यों को खोलने का सपना था। इसलिए उन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलिज, चंडीगढ़ में प्रवेश लिया था। उनका प्रिय विषय अंतरिक्ष विज्ञान था।

आज हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्यरत हैं। अपना विचार व्यक्त करें।

आपके भी कुछ सपने होंगे... बताएँ।

उन दिनों वैमानकी और अंतरिक्ष विज्ञान जैसे विषयों में युवतियों की रुचि कम होती थी। अपनी दृढ़ इच्छा और संकल्प के कारण कल्पना इस क्षेत्र में अध्ययन करने पर अडिग रहीं। उन्होंने बी.ई. की उपाधि प्राप्त की और उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गईं। टेक्सास विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर तथा कोलोरेडो विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। अमेरिका के सर्वोच्च अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र 'नासा' में सन् 1988 में वैज्ञानिक के रूप में कार्य करने लगीं।

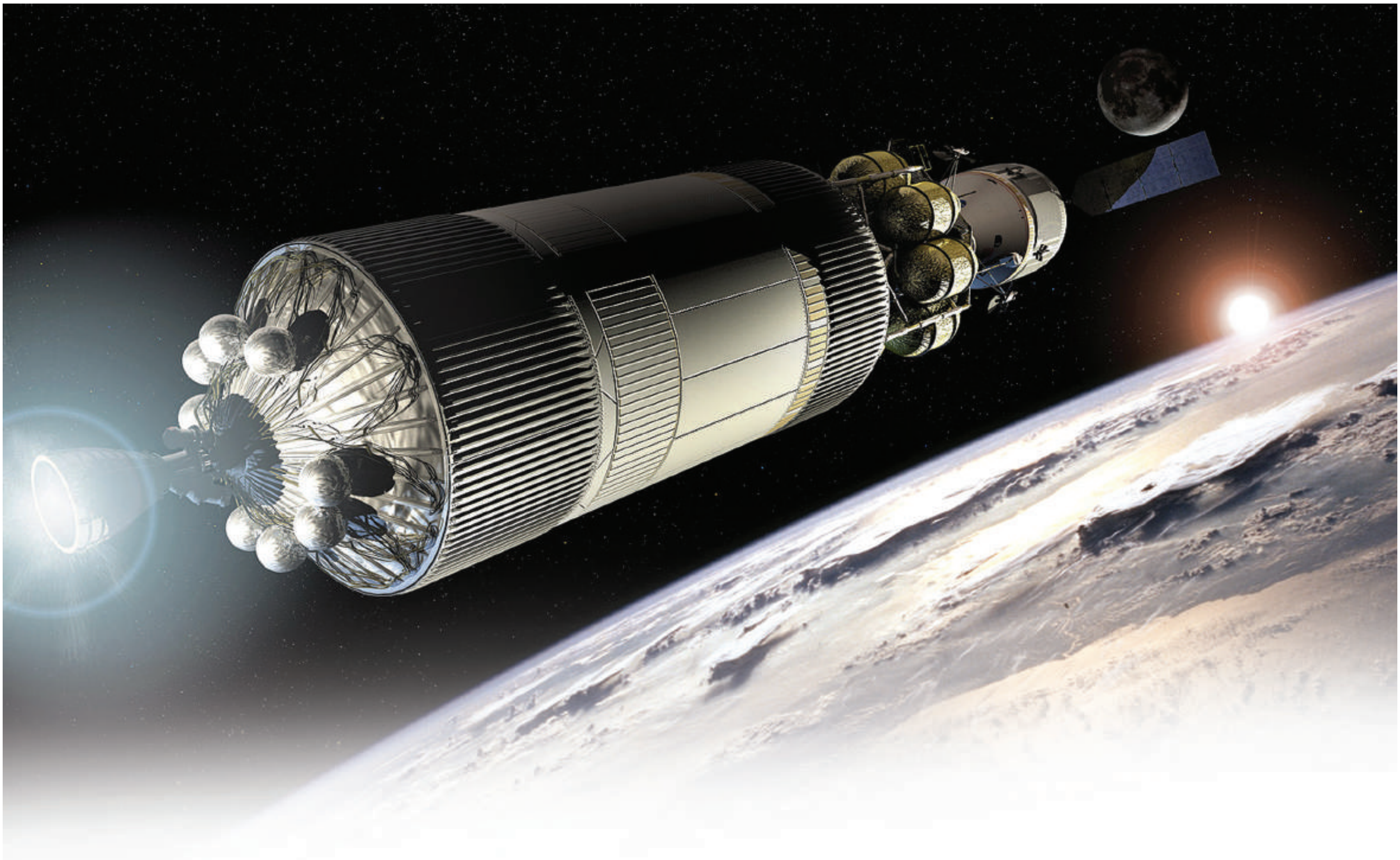

कल्पना चावला का सपना 1994 में साकार हो गया जब उन्हें अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुन लिया था। 19 नवंबर 1997 को उन्होंने अंतरिक्ष यात्रा की। इस प्रकार वे भारत की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री बनीं। कल्पना की दूसरी अंतरिक्ष उड़ान 16 जनवरी 2003 को शुरू हुई। वे कोलंबिया मिशन अभियान की यात्रा में मिशन विशेषज्ञ रहीं। कोलंबिया की उड़ान पर जाने से पूर्व कल्पना ने किसी पत्रिका के संवाददाता से कहा था - "परिस्थितियाँ कैसी भी हों, मेहनत करते रहने से सपने साकार होने में सहायता अवश्य मिलती है।"

पढ़ना एक गुना है, चिंतन दो गुना है, आचरण चौ गुना है। -आचार्य विनोबा भावे

क्रमबद्ध करें।

- कोलंबिया उड़ान में मिशन विशेषज्ञ बन गईं।
- नासा में वैज्ञानिक के रूप में भर्ती हो गईं।
- पहली अंतरिक्ष यात्रा की।
- अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुन लिया गया।

जीवनी का शीर्षक कहाँ तक सार्थक हैं? चर्चा करें।

लिखें।

विश्वास, प्रेम और साहस मेरे जीवन के साथी हैं।
आप मुझे सच-सच बताइए।
अंतरिक्ष विज्ञान मेरा प्रिय विषय था।
आपकी बात मेरी समझ में नहीं आई।
तुमने इतनी दूर से मुझे क्यों बुलाया था ?

इन वाक्यों से 'मैं' शब्द के विविध रूप छाँटकर लिखें।

कल्पना चावला की पहली अंतरिक्ष यात्रा सफल हुई। समाचार तैयार करें।

कल्पना चावला की प्रोफ़ाइल तैयार करें।

नाम	:
जन्म स्थान	:
पिता	:
योग्यताएँ	:
उपलब्धियाँ	:
....	

रेखांकित शब्दों की विशेषताओं पर चर्चा चलाएँ।

कल्पना चावला का जन्म हरियाना के करनाल जिले में हुआ।

कल्पना चावला पहली भारतीय महिला अंतरिक्ष यात्री है। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में प्रथम आईं, महिलाओं का नाम और उनका कार्य क्षेत्र लिखें।

अपने परिचित किसी व्यक्ति की प्रोफ़ाइल तैयार करें।

अनुवाद करें।

भारत सरकार ने सब प्रकार के वन्य प्राणियों के लिए देश भर में बीस राष्ट्रीय उद्यान बनाए हैं। वहाँ वन्यजीव निर्भय विचरण करते हैं। वन्य जंतुओं की वंश-रक्षा के लिए इस प्रकार के अभियान सारे विश्व में हैं।

इस अंश को आत्मकथा की शैली में बदलें।

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल जिले में हुआ। उनके पिता बनारसी लाल चावला की इच्छा थी कि पुत्री अध्यपिका या डॉक्टर बने। परंतु कल्पना के मन में अंतरिक्ष जगत् के रहस्यों को खोलने का सपना था। इसलिए उन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलिज, चंडीगढ़ में प्रवेश लिया था। उनका प्रिय विषय अंतरिक्ष विज्ञान था।

पढ़ें, मिलाएँ।

माँ ने पेड़ कटवाने को कहा।
चौथे साल भी पेड़ पर फूल नहीं आया।
माँ ने पेड़ कटवाने को कहा क्योंकि चौथे साल भी पेड़ पर फूल नहीं आया।

राहुल को आज जल्दी घर पहुँचना था।
उसकी माताजी विदेश जा रही हैं।

मेरा जीवन

सुभद्राकुमारी चौहान

मैंने हँसना सीखा है,
मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल-पल पर
मेरे जीवन में सोना।
मैं अब तक जान न पाई
कैसी होती है पीड़ा।
हँस-हँस जीवन में कैसे
करती है चिंता क्रीड़ा।

सुभद्राकुमारी चौहान
1904-1948
उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के निहलपुर में जन्म। 1921 में असहयोग आंदोलन के सिलसिले में कारावास। त्रिधारा, मुकुल,यह कदंब का पेड़, सीधे-साधे चित्र,मेरा नया बचपन आदि प्रमुख रचनाएँ।

'जीवन में सोना बरसाना' का क्या मतलब है?

उत्साह, उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में।
उल्लास-विजय था हँसता
मेरे मतवाले मन में।
सुख भरे सुनहले बादल,
रहते हैं मुझको घेरे।
विश्वास, प्रेम साहस हैं
जीवन के साथी मेरे।

कवयित्री विश्वास, प्रेम और साहस को क्यों अपने जीवन के साथी मानती हैं?

सही मिलान करके लिखें।

विश्वास, प्रेम, साहस	पल-पल पर बरसा करता है
उत्साह और उमंग	पीड़ा कैसी होती है
सुख भरे सुनहले बादल	जीवन में निरंतर रहते हैं
जीवन में सोना	मुझे घेरे रहते हैं
अब तक जान नहीं पाई	जीवन के साथी हैं

‘आसमान के लिए...’ जीवनी के आधार पर इन पंक्तियों का विश्लेषण करें।

उत्साह, उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में।

निम्नलिखित आशयोंवाली पंक्तियाँ चुनें।

- जीवन की समस्याओं का हँसी के साथ सामना करना है।
- जीवन की सफलता का रहस्य है उत्साह और उमंग।

कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

मेरी आस्वादन टिप्पणी में...

कवयित्री और कविता का उल्लेख है।	
आत्मविश्वास, उमंग आदि के महत्वों का उल्लेख है।	
कविता के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।	

हम हँसी के साथ अपने जीवन लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे।
'अपना जीवन लक्ष्य' पर निबंध तैयार करें।

सहायक बिंदुः

- आत्मविश्वास
- उत्साह के साथ कर्मरत
- समाज सेवा
- राष्ट्रसेवा
- दूसरों के प्रति प्रेम और सहानुभूति
- समस्याओं का सामना करना

शब्दार्थ

अड़िग	-	अटल
अनुसंधान	-	अन्वेषण
उपलब्धि	-	प्राप्ति
उपाधि	-	पदवी
उमंग	-	जोश
क्रीड़ा	-	खेल
घेरना	-	छा जाना
चार चाँद लगाना	-	अत्यधिक सुंदर बनाना
जीवन में सोना बरसना	-	समृद्धि होना
बरसना	-	वर्षा होना
रुचि	-	पसंद, दिलचस्पी
संकल्प	-	दृढ़ निश्चय
सुनहला	-	सोने के रंग का
सीखना	-	ज्ञान प्राप्त करना
स्नातकोत्तर	-	स्नातक की उपाधि के बाद का
हासिल करना	-	प्राप्त करना

अधिगम उपलब्धि

- जीवनी पढ़कर आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- प्रोफ़ाइल तैयार करने की अवधारणा प्राप्त करता है।
- कविता वाचन करके आशय ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- कविता आस्वादन करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- आस्वादन टिप्पणी तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- निबंध तैयार करने की क्षमता प्राप्त करता है।